ज्ञानामृत

नवम्बर, 1984
वर्ष 20 ❋ अंक 5

मूल्य 1.35

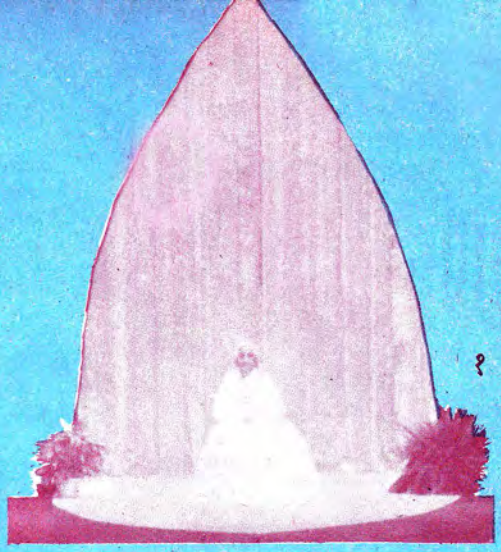

१

२

३

४

१. राजयोगिनी ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी सान फ्रांसिस्को में शान्ति के प्रकम्पन फैलाते हुए।

२. न्यूयार्क में दादी जी संयुक्त राष्ट्र संघ के सहायक महासचिव भ्राता ओ० सी० जोन्ह से मिलते हुए।

३. दादी जी संयुक्त राष्ट्र संघ में मारीशियस के स्थायी प्रतिनिधि भ्राता रामलोगन तथा उनकी धर्मपत्नी दादी जी के साथ।

४. दादी जी के भारत वापिस लौटने पर ग्याना उच्चायुक्त के निवास स्थान पर उनका स्वागत करते हुए उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता ए० एन० सेन जी।

५. दादी जी के स्वदेश लौटने पर नई दिल्ली में हुए सार्वजनिक स्वागत समारोह में पानामा के उच्चायुक्त उनका फूलों से स्वागत करते हुए।

बोकारो में 'राजयोग विश्व शान्ति महोत्सव' का उद्घाटन करते हुए बोकारो इस्पात कारखाने के महाप्रबंधक (पी० एण्ड ए०) भ्राता एस० पाण्डे जी। उनका साथ दे रही हैं ब्र०कु० दादी निर्मल शान्ता जी, ब्र० कु० हृदयमोहिनी जी तथा अन्य।

जकार्ता में ब्र० कु० जगदीश चन्द्र जी भारत के उच्चायुक्त भ्राता ओ० पी० मलहोत्रा जी से मिलते हुए।

दिल्ली और बम्बई से कुछ व्यापारी, वकील, न्यायाधीश तथा डॉक्टर आबू पर्वत पर राजयोग शिविर में पधारे। वे राजयोग शिक्षिकाओं के साथ पाँडव भवन में।

इण्डोनेशिया में भ्राता जगदीश जी एक 'स्प्रिच्युल हीलर' भ्राता मासागंग को ईश्वरीय सन्देश देते हुए।

जेनेवा में ब्र० कु० शशि भ्राता रोड्रिगो केरेजो से मिलते हुए।

पोखरा (नेपाल) सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित राज योग प्रदर्शनी के अवसर पर वाणिज्य उद्योग भवन सभाग्रह में प्रवचन करती हुई ब्र० कु० सुरेन्द्र जी।

सिडनी में ब्र० कु० जगदीश ज सेनेटर चाइलइज को ईश्वरीय सन्देश देते हुए। ब्र०कु० चारली साथ में हैं।

महाराष्ट्र से विशिष्ट व्यक्तियों का ग्रुप आबू पर्वत पर पाण्डव भवन का अवलोकन करने के पश्चात् 'ओम शान्ति भवन' के समक्ष। चित्र में भ्राता डाँगे, अध्यक्ष एस० एल० कमेटी, महाराष्ट्र राज्य, विधान सभा सदस्य भ्राता सी० एम० शर्मा तथा ए० एस० मार्के, भ्राता आर० आर० उपाध्याय तथा अन्य।

अमरेली सेवाकेन्द्र के सातवें वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित 'परमात्मा परिचय सम्मेलन' का उद्घाटन प्रिन्सिपल भ्राता उमेश भाई जोशी कर रहे हैं। ब्र० कु० सरला गीता तथा अन्य चित्र में हैं।

पोखरा में 'विश्व कल्याण मेला' का उद्घाटन गण्डकी अन्चल के संभागीय कमिश्नर भ्राता खड़क बहादुर जी दीप प्रज्वलित कर, कर रहे हैं।

Regd No. 10563/65-D(E)-70

जकार्ता में हिन्दू-बौद्धी धर्म के डायरैक्टर जनरल भ्राता पुडजा से मिलन के पश्चात् (बाएं से) दादा महबूनानी, भ्राता सुपाट भ्राता जगदीश जी, भ्राता पुडजा, ब्र० कु० हेलन तथा मीरा।

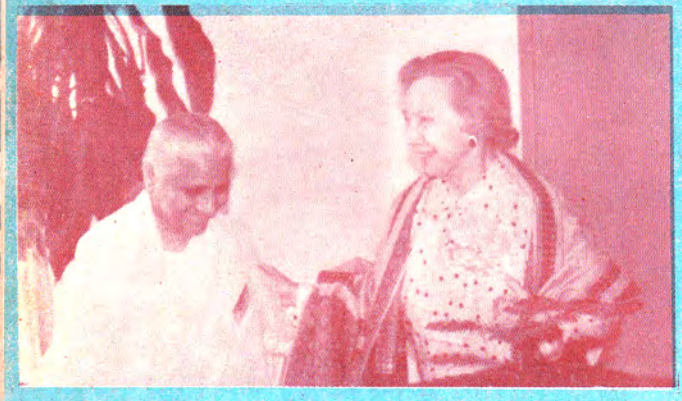

न्यूयार्क में 'शान्ति पुरस्कार भेंट कार्यक्रम' के अवसर पर दादी प्रकाशमणि जी बहन सैली स्विग शैली जी के साथ।

श्यामनगर (कलकत्ता) सेवा केन्द्र की ओर से दुर्गा पूजा के उपलक्ष में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन ब्र०कु० हृदयमोहिनी तथा अन्नपूर्णा कॉटन मिल के मैनेजर द्वारा सम्पन्न हुआ।

गांधी नगर (गुजरात) के राज्य के अधिकारीगण के समक्ष अपने राजयोग के अनुभव रखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ की पीस यूनिवर्सिटी के अध्यक्ष भ्राता रोडिरो करेज़ो जी। साथ में ब्र० कु० शारदा-बहिन हैं।

बोकारो में आध्यात्मिक मेले में ब्र० कु० चक्रधारी भ्राता एस० पाण्डे जी को चित्रों की व्याख्या करते हुए।

अमृत-सूची

क्रम सं०	विषय	पृष्ठ
१.	विदेश में भारत के प्रति प्यार है, राजयोग के प्रति रुचि है	१
२.	संसार उन्नति की ओर जा रहा है या विनाश की ओर (सम्पादकीय)	२
३.	ये दिन फिर नहीं आयेंगे	५
४.	इस संसार में लोभी लोगों की पहले गत बनेगी पीछे गति होगी	८
५.	आध्यात्मिक सेवा समाचार (चित्रों में)	९
६.	फिर काहे को प्रभु भजें (कविता)	१०
७.	आप कितने बुद्धिमान हैं ?	११
८.	सचित्र सेवा समाचार	१२
९.	किसी की बातों में न आना	१३
१०.	सर्वश्रेष्ठ हॉबी	१५
११.	अन्धकार से प्रकाश की ओर	१७
१२.	इतिहास की दृष्टि से पवित्रता का मूल्य	१९
१३.	सचित्र सेवा समाचार	२१
१४.	जीवन की गुह्य पहेली	२२
१५.	सचित्र सेवा समाचार	२४
१६.	संसार की हालत और परमात्मा का सन्देश	२५
१७.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	२९

विदेश में भारत के प्रति प्यार है, राजयोग के प्रति रुचि है

दादी प्रकाश मणि

आबू पर्वत—प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणी जी ७ सप्ताह की विदेश यात्रा सफलता पूर्वक सम्पन्न कर १८ अक्टूबर को अपने मुख्यालय पाण्डव भवन में पहुँच गई हैं। इस यात्रा के दौरान दादी जी ने ११ देशों के २५ से भी अधिक राजयोग सेवाकेन्द्रों का भ्रमण किया। सर्व स्थानों पर शहर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के स्नेह मिलन, सार्वजनिक कार्यक्रम, टी० वी०, रेडियो तथा अखबार वालों के साथ भेंट वार्तायें हुईं। सर्व स्थानों पर दादी जी सफलताओं की विजय पताका लहराते जब भारत में पहुँची तो सर्वप्रथम दिल्ली में आपका भव्य स्वागत हुआ। स्वागत उपलक्ष्य में १२ देशों के राजदूत तथा अन्य कई प्रतिष्ठित व्यक्ति, मंत्रीगण आदि पधारे थे। जयपुर तथा अहमदाबाद में भी शहर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने आपको सम्मानित किया। आबू रोड रेलवे स्टेशन पर रेलवे स्टाफ तथा नगर निवासियों ने अभिनन्दन गेट बनाकर फूल मालायें अर्पित कर स्वागत किया। आबू रोड में एक प्रेस कान्फ्रेंस भी रखी गई। आबू पर्वत पर पोलोग्राउण्ड के सामने गेट बनाकर नगर निवासियों ने आपका स्वागत किया। लगभग ११ मुख्य संस्थाओं के लोग इस अवसर पर एकत्रित थे। उसी स्थान पर २ स्कूलों के लगभग २०० बच्चों ने शिव बाबा की झण्डियाँ लहराकर सम्मानित किया। आध्यात्मिक संग्रहालय में ट्रेनिंग कालेज के ६०-७० टीचर्स, प्रिंसीपल, प्रोफेसर्स, क्रिडिसकार्नर स्कूल के १५० बच्चे, एयरफोर्स के कुछ भाई-बहनों ने दादी जी को गुलदस्ते तथा फूल मालायें अर्पित कर स्वागत किया। दादी जी ने विदेश यात्रा का अनुभव सुनाते हुए कहा कि **हर देश में देखा सभी का भारत के प्रति अति प्यार है।** कई लोग भारत की संस्कृति तथा आध्यात्मिकता को बहुत पसन्द करते हैं। हिन्दी भाषा के आध्यात्मिक गीत बड़ी लगन से सुनते और वायब्रेशन लेते हैं। **राजयोग के प्रति सभी की विशेष रुचि है।** हर स्थान की अनेक विशेषताएं हैं। □

संसार उन्नति की ओर जा रहा है या विनाश की ओर

आज हम देखते हैं कि विज्ञान के आविष्कारों से संसार में दिनोंदिन बहुत ही तीव्र गति से परिवर्तन हो रहे हैं। नित्य नई सुविधाजनक वस्तुएँ बनाई जा रही हैं और ऐसे-ऐसे यन्त्र तथा साधन जुटाये जा रहे हैं कि पहले यदि किसी कार्य को दिनों और महीनों में और कठिनाई से किया जा सकता था तो आज उस कार्य को नये साधनों से घण्टों और मिनटों में बहुत ही सहज रीति से कर लिया जाता है। विज्ञान ने दैनिक जीवन के लिए भी बहुत-सी उपयोगी चीज़ें मनुष्य को दी हैं और परिणामतः मनुष्य का रहन-सहन और खान-पान का तरीका भी काफ़ी बदल गया है और घर-मुहल्ले, ग्राम-नगर, सबका रंग-ढंग बदल गया है। आज टोंटी घुमाने मात्र से जल मनुष्य की सेवा में उपस्थित हो जाता है, बिजली का बटन दबाने से अग्नि प्रगट हो जाती है अथवा पवन मनुष्य को पंखा करने लग जाता है या विद्युत-प्रकाश मनुष्य की नौकरी में उपस्थित होकर कल-कारखानों को तीव्र गति से चलाने के कार्य में लग जाता है। मनुष्य के आने-जाने के लिए बैल-गाड़ियों के स्थान पर आज शीघ्र-गामी मोटरें, बसें, रेलगाड़ी और जहाज़ बन चुके हैं और अन्तरिक्ष यानों (Space-Ships) तथा राकेटों द्वारा मनुष्य को ग्रहों तक पहुँचाने के प्रयत्न हो रहे हैं। इन तथा इन जैसे अन्य साधनों को तथा सुविधाओं को देखकर आज कई लोग मानते हैं कि संसार तरक्की कर रहा है, वह उन्नति के शिखर पर जा रहा है। परन्तु क्या यह सच है कि संसार उन्नति कर रहा है?

आज के संसार की हालत पर गहराई से विचार

गहराई से देखने पर मनुष्य इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि एक ओर तो विज्ञान ने मनुष्य को मशीनें देकर उसकी उत्पादन-क्षमता को बढ़ा दिया है और कार्य को सहज बना दिया है परन्तु दूसरी ओर मनुष्य का हृदय मशीन की तरह कठोर हो गया है। मनुष्य के मन से दया, सहृदयता और करुणा की भावना उठ गई है। यद्यपि आज विज्ञान ने खेती के लिए मनुष्य को ट्रैक्टर (Tractor) आदि यन्त्र दिये हैं परन्तु सम्पन्न देशों की निर्दयता और स्वार्थपरता का यह हाल है कि आज संसार में आधे से ज्यादा लोगों को दो वक्त पेट-भर खाना नहीं मिलता और पूँजीपति लोग करोड़ों रुपए इकट्ठे करने के बाद भी अपने कारखानों में कार्य करने वाले मजदूरों की हालत पर दया नहीं करते। आज विज्ञान ने मनुष्य को मोटरें, रेल-गाड़ियाँ विमान आदि साधन देकर उसकी रफ्तार को तेज तो कर दिया है परन्तु इन साधनों से उसका जीवन बहुत ही व्यस्त और चिन्ता-ग्रस्त हो गया है और उसके जीवन में झंझट बढ़ ही गये हैं। हम देखते हैं कि कहीं पानी को बाँधकर मनुष्य ने बिजली तो पैदा की है और कहीं पहाड़ को काट कर रास्ता भी बनाया है परन्तु यह सब करके उसने सब सन्तुलन बिगाड़ दिया है और कल-पुरजों से कलकल अथवा कलह-क्लेश बढ़ाकर अपनी नींद भी हराम कर दी है और संसार में कृत्रिमता (Artificiality) ही की वृद्धि की है।

आज विज्ञान ने मनुष्य को अनेक ऐसे यन्त्र तो दिये हैं जिनसे वह सब्ज़ी और फलों को कई दिनों तक ताज़ा हालत में रख सकता है, सुगमता से आग जला सकता है, शरद ऋतु में कमरे को गरम रख सकता है, स्नान के लिए झट पानी को गरम या ठण्डा कर सकता है, स्विच दबाने से दूर-दूर के समाचार सुन सकता है, परन्तु हम देखते हैं कि इन सभी के बावजूद उसे तृप्ति नहीं हुई, बल्कि उसकी वासना और विलासता बढ़ी ही है। इस भोग-सामग्री से वह अधिक भोगी ही बना है, उसका मन निज स्वरूप से और परमपिता परमात्मा से तो दूर ही होता गया है। उसका ध्यान ईश्वर से हटकर और इच्छाओं में ही लगता गया है जो कि कभी भी पूर्ण होने वाली नहीं हैं।

आज मनुष्य ने मोटर-कार और टेलीफ़ोन को, ट्रांसिस्टर या टेलीविज़न आदि-आदि को उच्च

जीवन-स्तर (Status) का सूचक मान लिया है और वह इन साधनों को जुटाने के लिए रिश्वत, मिलावट, बे-ईमानी आदि हर अनुचित रीति को अपनाता है, आत्मा की आवाज़ को दबाता है और दूसरों को लूट-खसूट में लगता है। इस प्रकार उसमें अधर्म, अनाचार, भ्रष्टाचार, व्यभिचार आदि बढ़ा ही है और उसके फलस्वरूप वह सच्चे सुख से दूर ही हुआ है। वह साधनों का दास हो गया है। वह अपनी स्वतन्त्रता को खो बैठा है और चरित्र रूपी अतुल सम्पत्ति को, योग के आनन्द रूपी अनमोल खज़ाने को गँवा बैठा है और एक शराबी की तरह थोड़े समय के लिए नाली में पड़ा हुआ मस्ती मना रहा है।

विज्ञान ने मनुष्य को बुद्धि का विकास तो दिया है परन्तु बुद्धि की दिव्यता छीन ली है। उसने मनुष्य को बिजली और अणुशक्ति तो दी है परन्तु उससे आत्मिक शक्ति ले ली है। उसने साधन तो जुटाए हैं परन्तु आध्यात्मिक साधना को मिटा दिया है। उसने कर्म में यांत्रिक कुशलता तो लाई है परन्तु धार्मिक कुशलता को नष्ट किया है। उसने अन्ध-श्रद्धा को तो मिटाया है परन्तु मनुष्य को गोला और बारूद देकर आतंक और अत्याचार को बढ़ाया है और अविश्वास को उपजाया है तथा भय को बढ़ाया है। उसने जीवन की समस्या की ओर मनुष्य का ध्यान तो खिंचवाया है परन्तु उन समस्याओं का जो वास्तविक हल है, अर्थात पवित्र आचरण और परमात्मा की स्मृति रूपी जो एकमात्र समाधान है, उससे उसका ध्यान हटाया है। अतः सोचने की बात है कि मनुष्य को लाभ हुआ है या हानि ही हुई है, वह उन्नति के शिखर पर चढ़ा है या गिरावट की अन्तिम सीमा तक पहुँचा है।

संसार की वर्तमान दशा की रावण-राज्य की दशा से तुलना

एक आम मान्यता है कि रावण-राज्य में भी सभी सुविधाएँ उपलब्ध थीं। उसकी लंका नगरी सोने की थी। सभी प्रकार की विद्याएँ अपने विकास की चरम सीमा पर पहुँच चुकी थीं। विमानों का प्रयोग होता था और अनेक प्रकार के बाण भी युद्ध में प्रयोग किए जाते थे। वरुण, पवन, अग्नि आदि रावण की चारपाई के पायों से बँधे हुए थे। वरुण पानी भर लाता था, पवन पंखा करता था और अग्नि भोजन पकाता था, सहज ही सब काम होता था, कोई कठिनाई न थी। कहते हैं कि मनुष्य ने रावण राज्य में सब कुछ अपने हाथ कर लिया था परन्तु केवल दो शक्तियाँ उसे प्राप्त न थीं—एक तो यह कि उसमें लोहे को सोना बनाने की शक्ति नहीं थी और दूसरा उसके पास कोई ऐसी सीढ़ी अभी तक नहीं बनी थी कि जिससे वह चाँद तक पहुँच सके। उसके राज्य में बाकी सब कुछ था, उस सब भोग सामग्री के साथ काम भी था और क्रोध भी, आलस्य भी और हठ तथा ज़िद भी, ईश्वर-विमुखता भी थी और प्रभु का विरोध भी, अतः सभी जानते हैं कि उसका परिणाम क्या हुआ! उस भौतिक उन्नति का अन्त कैसा रहा! सब सुख-सामग्री होते हुए भी वे 'असुर' कहलाए और वह राज्य 'रावण राज्य' (रुलाने वाला राज्य) कहलाया और आखिर उस सभ्यता, संस्कृति या समाज का विध्वंस और विनाश ही तो हुआ। हम देखते हैं कि ठीक वैसे ही हालत आज के समाज की सभ्यता की है।

आज भी मनुष्य के पास सब-कुछ है, उसने पवन, अग्नि, वरुण (जल) आदि को एक प्रकार से वश कर लिया हुआ है और अमरीका आदि में सोने की भी कोई कमी नहीं है। आज भी संसार में सबकुछ है परन्तु एक चरित्र, दिव्य बुद्धि अथवा धर्म नहीं है। मनुष्य ईश्वर से विमुख है अथवा विपरीत बुद्धि वाला है। अतः आज के संसार को रावणीय संसार कहना अतिशयोक्ति नहीं है बल्कि यथार्थ वर्णन एवं सत्य-निरूपण है। ऐसे संसार की क्या गति होगी, उसका क्या हाल होगा, इस तुलना द्वारा अब सहज ही इसका निर्णय हो सकता है। यह उन्नति के शिखर पर है या अवनति के गर्त्त में गिरा हुआ, यह अब दिखाई दे रहा है। आज इस संसार में सब कुछ होते हुए भी मानो कुछ नहीं है क्योंकि इसमें एक चरित्र नहीं है और ईश्वर-निष्ठता नहीं है और उसके न होने से इस विपरीत-बुद्धि वाले समाज का विनाश आवश्यम्भावी है।

चरित्र के बिना सब सुख थोथा है और काक-विष्ठा के समान है

कई लोग सोचते हैं कि चरित्र नहीं हुआ तो क्या बात हैं, वाकी सब-कुछ तो है। इस प्रकार वे चरित्र को "एक चीज़" मानकर उसके मूल्य को कम कर देते हैं। परन्तु वह एक चीज़ कितने महत्त्व की है और बुनियादी है, इस बात पर यथोचित ध्यान नहीं जाता। इस विषय में मुझे एक लेखक की कुछ पंक्तियां याद हो आई हैं। लेख में बताया गया था कि एक बार एक युद्ध में एक योद्धा के घोड़े के नाल से एक कील निकल गया और वह नाल लटकने लग गया। उससे घोड़े को बहुत कठिनाई हुई और सवार को उतरना पड़ा। आखिर युद्ध में उस योद्धा के पक्ष की हार हुई थी। लेखक ने आगे यह सारा कुछ वर्णन करके अन्त में ऐसा लिखा था कि—For the want of a nail. a horse was lost. For the want of a horse, the rider was lost. For the want of a rider the battle was lost. For the want of the soldier, the country was lost. For the want of a nail, all this was lost "अर्थात घोड़े के नाल की कील निकल जाने के कारण एक घोड़ा बेकार हो गया और उसकी कमी के कारण एक घोड़े-सवार योद्धा बेकार हो गया। उसकी कमी के कारण लड़ाई में उस योद्धा के पक्ष की हार हो गई और हार के कारण देशवासियों से देश का राज्य छिन गया। एक कील की कमी के कारण ही यह इतनी सारी हानि हुई!" ठीक इसी प्रकार, आज एक चरित्र अथवा सत्य धर्म अथवा ईश्वर-निष्ठा न होने के कारण विज्ञान द्वारा प्राप्त किए गये सभी साधन बेकार हैं और यह सब सुख थोथे हैं। इनके होते हुए भी मनुष्य चिन्तित और दुःखी है और उसकी आत्मा को सच्ची शान्ति प्राप्त नहीं है।

इसकी भेंट में सतयुग में अपार सुख था क्योंकि तब न केवल मनुष्य के पास अतुल सम्पत्ति थी बल्कि चरित्र रूपी धन भी था। तब न केवल विज्ञान द्वारा प्राप्त साधन मौजूद थे बल्कि मनुष्य की बुद्धि दिव्य थी जो कि विज्ञान को रचनात्मक (Constructive) तथा अहिंसात्मक ही कार्यों में लगाती थी। तब मनुष्य वस्तुओं और साधनों के वशीभूत न था बल्कि वे उसके वश थे। अतः जैसे उत्तम स्वभाव वाले वह लोग थे वैसा ही उनका प्रभाव प्रकृति पर था और वैसा ही उत्तम सुख उन्हें प्राप्त था। विमान तब भी थे परन्तु तब लोग बे-ईमान न थे। बिजली तब भी थी परन्तु तब मनुष्य की बुद्धि में वह खुजली न थी कि जिससे उत्तेजित होकर मनुष्य विध्वंस और विनाश कर डालता है अर्थात उसमें क्रोध, आवेश, घृणा या ईर्ष्या न थी। अतः वह दिन बहुत ही सुहावने थे, वह सुख सच्चा था!

संसार के इस वास्तविक इतिहास को अथवा उन्नति और अवनति की इस अद्भुत कहानी को जानकर अब हमें इससे एक अविस्मरणीय शिक्षा लेनी चाहिए। अब जबकि कलियुग जा रहा है और सतयुग आ रहा है तो हमें **विज्ञान को सुखदायक बनाने के लिए ज्ञान लेना चाहिए**। अब हमें गँवाई हुई पवित्रता को फिर से प्राप्त करने का पूरा पुरुषार्थ करना चाहिए। हमने चारित्रिक अवनति से विज्ञान द्वारा जिस संसार को नरक बना दिया है उसे अब चरित्र बल द्वारा स्वर्ग बनाने के कार्य में लग जाना चाहिए। अब हमें परमपिता परमात्मा के प्रति प्रीति-बुद्धि वाला होकर राम राज्य की स्थापना करनी चाहिए वरना इस रावण-राज्य के होने वाले विनाश के पहले यदि हमारे विकर्मों का विनाश न हुआ तो हमें निराशा ही का सामना करना पड़ेगा!

—जगदीश

ये दिन फिर नहीं आयेंगे...

ब्र० कु० सूरजकुमार आबू

कहाँ कलियुग के इस सुनसान जंगल में मानव का बिखरा हुआ असन्तुलित जीवन और कहाँ ब्रह्मा-वत्सों का ईश्वरीय प्यार में निखरता हुआ, आनन्दों से ओत-प्रोत होता हुआ सन्तुष्ट जीवन... कितना अन्तर है। एक ओर प्रकाश है...दूसरी ओर अन्धकार...एक ओर सांसारिकता के सिवाय कोई चिन्तन नहीं, तो दूसरी ओर अलौकिकता के सिवाय कोई आकर्षण नहीं...परन्तु मनुष्यों का एक विशाल समूह उसी अन्धकार में प्रवेश करता जा रहा है। उस अन्धकार में तारों की रिमझिम व चन्द्र की चाँदनी भी मायावी काले बादलों में लोप हो चुकी है। और दूसरी ओर स्वयं को आलोकित अनुभव करने वाला एक छोटा सा मानव समूह...जो ज्ञान-सूर्य के आलोक से आनन्दित हो रहा है।

दिन गुजर जाते हैं...यादें रह जाती हैं...कोई को पश्चाताप मिलता है और कोई को महान भाग्य। जिन दिनों की गाथाओं से शास्त्र पुराण भरे हुए हैं, जिन दिनों की कल्पनाएँ करके ईश्वर प्रेमी भाव-विभोर हो उठते हैं, जिन दिनों की इन्तज़ार में अनेक प्रभु-भक्त बाट जोह रहे हैं...वे दिन कौन से हैं...? वे दिन कब आयेंगे...? क्या उन दिनों से हमारा भी कुछ सम्बन्ध है...? क्या उन दिनों को हम इन नयनों से देख सकेंगे...? आदि आदि प्रश्न प्रभु-प्रेमियों के मन में अवश्य उठते होंगे...

तो आओ सत्य रहस्य सुनायें...जो कल्पना नहीं...जो स्वप्न भी नहीं...जो कि अन्ध श्रद्धा भी नहीं, बल्कि बुद्धि द्वारा कसी गई, अनुभवों द्वारा देखी गई, कानों द्वारा प्रत्यक्ष सुनी गई सत्य घटना है। वह है...परमात्मा से मिलन के ये अमूल्य क्षण...ये दिन कल्प में केवल एक ही बार आते हैं। परन्तु विदूषकों ने कलियुग को बच्चा कह कर मनुष्यों को इन दिव्य अनुभवों से दूर कर दिया है। परन्तु जिन्होंने शास्त्रों की चादर को उठाकर अपने दिव्य नयनों से इस सत्य को देखा है, परखा है, वे जानते हैं कि हम उस समय पर खड़े हैं जो कि आत्माओं के अपने प्राणेश्वर परमपिता से मिलने का है, जो कि सम्पूर्ण सत्य को जानने का समय है, जो कि प्रभु द्वारा पुनः गीता ज्ञान दिये जाने का समय है...जो कि प्रभु द्वारा भाग्य वितरण का दिव्य काल है...यह वह अनुपम काल है जबकि परमात्मा की नज़रें मनुष्यों पर पड़ती हैं... जबकि ईश्वर स्वयं आकर मनुष्यों को रावण की जंजीरों से मुक्त करते हैं।

तो आइये, उन गिनी-चुनी आत्माओं की ओर नज़र दौड़ाएँ जो प्रभु-मिलन के रसों में इस वीरान संसार को भुला बैठी हैं। जो कि अपने परम-पिता से मिलकर अपनी जन्म-जन्म की प्यास बुझा चुकी हैं, जिनका मन प्रतिदिन, ज्ञान-सागर की ज्ञान की लहरों से भाव-विभोर हो जाता है, जिनका मन उसकी पावन धारा में स्नान कर पावन होता जा रहा है।

तो हे ऐसी महान विभूतियों...ज़रा याद करो—

भगवान से ये मधुर रूह-रिहान (वार्तालाप) के ये दिन फिर लौट कर नहीं आयेंगे। द्वापर युग के बाद जन्म-जन्म भक्ति में तो उससे प्रार्थनाएँ ही करते रहेंगे, मात्र उसके कीर्तन व गुणगान ही करते रहेंगे, उससे माँगते ही रहेंगे और कभी उसके दर्शनों की अभिलाषा ही करते रहेंगे, परन्तु मित्रवत् रूह-रूहान करने के दिन...मन की प्रत्येक आवाज़ उस तक पहुँचाने के दिन पूरे कल्प में फिर

नहीं आयेंगे···फिर तो यादें ही रह जाएंगी कि कभी भगवान आये थे और भाग्यशाली गोप-गोपियाँ उनसे मन भर कर बातें करती थीं। अतः जिन्हें ये श्रेष्ठ अवसर प्राप्त हैं वे इनका पूर्ण लाभ उठायें। इससे मन भाव-विभोर हो उठेगा और उसे अत्यधिक ईश्वरीय आनन्द प्राप्त होगा। ज़रा कल्पना करो···क्या होगें वे जो भगवान से बातें करते हों···और वे···और वे···वे···तुम ही हो। अतः औरों से बातों का रस लेना बन्द करो और प्रभु से सदा रुह-रूहान का आनन्द ग्रहण करो।

ये अतीन्द्रिय सुखों के अलौकिक झूले में झूलने के दिन केवल ऋषियों द्वारा स्मरण ही किये जाएंगे जो कि तुम्हें अधिकार रूप में और वरदान रूप में प्राप्त हैं। इन्द्रिय-सुख भोग का समय तो पूरा कल्प है। सतयुग से आदि से कलियुग तक केवल भौतिक सुख ही प्राप्त होंगे, परन्तु अतीन्द्रिय सुख नहीं···अतः अब समय है अशरीरी होकर भौरें की तरह सतत इस रस का रसास्वादन करने का··· इससे स्वयं को पूर्णतया रंग लो···ऐसा रंग लो जो रंग ज़रा भी फीका न पड़े···इस सुख के आगे समस्त सांसारिक प्राप्तियाँ सूनी प्रतीत होंगी। और मन की तृष्णाएँ इस सागर सम अनुभव में विलीन हो जाएंगी। अतः देखना···कहीं ये अतीन्द्रिय सुखों के दिन साँसारिक प्राप्तियों के पीछे भागते-भागते लोप न हो जाएँ···

भगवान की सागर तुल्य लहराने वाली अमृत वाणी सुनने का परम-सौभाग्य केवल हम गोप-गोपियों को ही प्राप्त है। वो वाणी जिसमें सभी गुह्य रहस्य स्पष्ट खुलते जा रहे हैं, जिसे सुनकर, मन मुग्ध होकर नाचने लगता है। जिसका पान करके समस्त व्याधियाँ समाप्त हो जाती हैं···सभी समस्याएँ निर्बल हो जाती हैं···जिसे सुनकर ये दुख भरा जगत विस्मृत हो जाता है···जिससे मन को श्रेष्ठ दिशा मिलती है और जिस द्वारा रूहों पर प्रभु का प्यार बरसता है···।

जन्म जन्म हमने ग्रन्थों के मन्त्र सुने होंगे और सत्य की खोज की होगी। परन्तु अब जबकि सत्य-मूर्त्त रूप में हमारे सम्मुख है···तब ऐसे ज्ञान-सागर में प्रतिदिन स्नान करने से हम दूर क्यों रहें··· सांसारिक व्यस्तता का बहाना लेकर, अलबेलेपन की चादर ओढ़कर हम इस परम सौभाग्य से दूर न चले जायँ···भगवान स्वयं ज्ञान बरसात करने हमारे पास आते हैं···जिसे जन्म जन्म हमने ढूँढा, वे स्वयं हमें ढूँढ़ चुके। तो आओ, प्रतिदिन उस ज्ञान वीणा की मधुर तान से स्वयं को मुग्ध करने का परम आनन्द ग्रहण करें।

हम इसे मात्र औपचारिकता या नियम ही न समझें। इसमें जीवन का जो सच्चा रस समाया है, उसे जीवन में समा लें।

हे पुण्य आत्माओं—तुम्हारे जन्म-जन्म के पुण्यों के कारण तुम्हें ये भगवान के साथ रहने का अतुलनीय भाग्य मिला है। जो विद्वानों के लिए कल्पना है, तुम्हारे लिए साकार है···भक्त और ऋषि उसे सर्वव्यापी मानकर भी उसकी उपस्थिति का आनन्द नहीं प्राप्त कर सके, परन्तु तुम्हें···उसने अपने नयनों के नूर बनाकर अपनी पलकों में छुपा लिया है,···उसके ही आँचल में सुखद विश्राम पाते रहो···।

सदा उसे अपना परम मित्र बनाकर साथी बना लो। उसके साथ रहने में या उसे अपने साथ रखने में क्या आनन्दित क्षण बीतेंगे···ज़रा चिन्तन करो। भगवान को सच्चा साथी बना लो तो और किसी साथी की आवश्यकता नहीं रहेगी। और जब माया देखेगी कि अरे, इनके साथ तो सर्व शक्तिवान है तो पास आने का साहस भी नहीं करेगी, बल्कि दूर से नमन करके सदा के लिए गमन कर लेगी।

अतः भगवान के साथ रहने की ये हीरे सम घड़ियाँ कहाँ यों ही न बीत जाएँ···पुरुषार्थ की उधेड़ बुन की उलझन में कहीं उस परम मित्र से किनारा न हो जाए। यदि ये मिलन की घड़ियाँ योंही बीत गईं तो ज़रा सोचो फिर पश्चाताप की घड़ियाँ बहुत लम्बी होंगी। लोग तो पूछते हैं कि तुमने भगवान को देखा है? परन्तु उन्हें क्या पता

कि हमारे जीवन के ये दिन उसके साथ बीत रहे हैं।

प्रभु से वरदान पाने के ये दिन कितने निराले हैं···कितने सुख भरे हैं···ये दिन याद आया करेंगे···। भगवान से वरदान पाने के लिए ऋषि-गण कठिन साधनाएँ करेंगे, तब कहीं कोई एक वरदान उन्हें प्राप्त होगा। परन्तु अब स्वयं वर-दाता ही हमारा है···हमें उसने अनेक वरदान देकर वरदाता ही बना दिया। फिर हमें वरदान माँगने की क्या आवश्यकता। अब इस अधिकारी स्वरूप की महानतम स्थिति में स्थित हो जाओ तो सब वरदान तुम्हारे हैं।

हमें भिखारी बनकर प्रभु से वरदान नहीं माँगते रहना है बल्कि उनकी आज्ञाओं पर चलकर अपने इस जीवन को ही वरदानी बना लेना है। ताकि हमारे एक-एक बोल में वरदान समाया हो··· ताकि हमारी दृष्टि ही दूसरों को वरदान दे सके··· ताकि हमारा प्रत्येक संकल्प, दूसरों की मनोकाम-नाएँ पूर्ण करने वाला हो···। अतः वरदानों से झोली भरने के इस वरदानी काल के महत्व को सम्पूर्ण रूप से जानकर इसका सम्पूर्ण आनन्द ग्रहण करें···। इससे जीवन की तथा पुरुषार्थ की कठिनाई समाप्त हो जायेगी। प्रत्येक कदम पर सफलता का वरदान प्राप्त होगा और सेवा तीव्रगति से आगे बढ़ेगी।

भगवान के समान सम्पूर्ण बनने का मौका पूरे कल्प में फिर नहीं मिलेगा···ये अन्तिम बाजी है··· योगी भगवान का ही स्वरूप होता है। और हम अपने सम्पूर्ण स्वरूप द्वारा ही सम्पूर्ण परमात्मा को सम्पूर्ण रूप से जान सकेंगे। सम्पूर्णता का सुख अथवा फरिश्ते-स्वरूप का सुख, जबकि हम इस संसार से उपराम हुए, प्रकाश के पुंज में चहुँ ओर विचरण कर सकें, अब ही प्राप्त होता है···ये दिव्य अनुभव आध्यात्मिकता या योगियों के सर्वोच्च अनुभव हैं। हम इन अनुभवों की ओर तीव्रता से कदम बढ़ायें।

इस स्थिति में···वर्तमान में ही हमें सतत मुक्ति व जीवन्मुक्ति का अनुभव रहता है। हम इस संसार के प्रभाव से परे पूर्णतया निर्लिप्त हो जाते हैं। विकर्मों के जन्म-जन्म के सभी बन्धन टूट जाते हैं। और हम कर्मातीत स्थिति का रस प्राप्त करते हैं। अतः अब संसार के लोग अन्तरिक्ष में उड़ते हुए हम फरिश्तों का साक्षात्कार करें। अन्तरिक्ष यानों के दृश्य तो सबने बहुत देखे व सुने हैं, परन्तु हमारा ये सम्पूर्ण फरिश्ता स्वरूप इस विज्ञान पर आध्यात्मिकता की विजय है। अतः हम इस महान काल को पूर्ण महत्व दें···छोटी-छोटी बातों में हमारे ये सुखद अनुभवों का काल न बीत जाए।

देवी देवताओं से भी श्रेष्ठ भाग्य को अनुभव करने के ये दिन, अथवा यों कहें कि ८४ जन्मों के भाग्य प्राप्त करने के ये दिन, बहुत थोड़े ही रह गये हैं। जन्म-जन्म हम इस अखुट भाग्य का उपभोग करेंगे···परन्तु भाग्य बनाने का आनन्द अनोखा ही है।

अतः हमें भाग्य बनाने की जो अनेक विधियाँ ज्ञात हैं, हम उनका पूर्ण लाभ उठायें···हर कदम पर हमें श्रेष्ठ भाग्य प्राप्त है···तन की सेवा···मन की सेवा···धन की सेवा···वाचा की सेवा···पवित्र तरंगे फैलाने की सेवा···दूसरों को सुख देने की सेवा···इनके बाद असीम खुशी होती है। देवताओं की श्रेष्ठ भाग्य को भोगने की खुशी अलग है, परन्तु हमारी भाग्य बनाने की खुशी अति श्रेष्ठ है।

अतः इस भाग्य बनाने के समय को हम अपने पिछले दुर्भाग्य को याद करके ही न बिता दें··· अब पुराना सब कुछ भूल जाओ और सम्पूर्ण भाग्य का भण्डार भरपूर कर लो। यदि अब कुछ भी कमी हमारे भाग्य में रह गई, वह कभी भी पूरी नहीं की जा सकेगी और उसका अभाव जन्म-जन्म महसूस होगा।

लोग याद करते हैं कि ओह सीता कितनी भाग्यशालिनी थी, राधा का क्या महान भाग्य था ···गोपियों के भाग्य के क्या कहने···परन्तु अब वही भाग्य पुनः हमारे द्वार पर आया है···देखना

ऐसा न हो कि कहीं भाग्य हमारे दरवाज़े खट-खटाता रहे, और नींद ही न खुले···

हे पवित्र आत्माओं···सम्पूर्ण पवित्रता का आनन्द रस ग्रहण करने के दिन तुम्हारे सम्मुख हैं। तुम्हारे ये सुखद क्षण माया से युद्ध करते-करते ही न बीत जाएं···ऐसा न हो कि अन्त तक तुम प्रयासों में ही लगे रहो और सम्पूर्ण पवित्रता तुम्हारे लिए स्वप्न बनी रहे।

तुम पवित्रता के सागर के पवित्र रत्न हो··· पवित्रता के गहनों से सजे रहो···तुम इतने सज जाओ जो माया की चमक फीकी पड़ जाए। देखो, पवित्रता से भरा कलश तुम्हारा सिर पर सुशोभित हो रहा है···सम्पूर्ण पवित्रता अधिकार है।

अपवित्रता की काली रातें तो बहुत देखीं··· विषय-सागर की लहरों में तो जन्म-जन्म डूबते रहे···काम की कालिमा से जन्म-जन्म तो मन को सुन्दरता नष्ट की···अब इनसे मन से किनारा करो और पवित्रता का सुन्दर रस ग्रहण करो। जन्म-जन्म गीत गाये कि हे प्रभु, विषय-विकार मिटाओ, अब ये गीत गाने छोड़ो। तुम्हें तो अनेक आत्माओं को पवित्रता का वरदान देना है।

अतः हे प्रभु प्यार में पलने वाली रूहों, याद करो···ये प्रभु-प्यार फिर कभी प्राप्त नहीं होगा··· प्रभु की छत्रछाया में जीवन बिताने के ये दिन बार-बार नहीं आयेंगे···ज्ञान सूर्य की सत्य की, शक्तियों की किरण प्राप्त करने के ये दिन फिर कहाँ से आयेंगे···मनुष्यों का प्यार भी देखा··· देवताओं का प्यार भी देखा···जीवन के अनेक उतार-चढ़ाव भी देखे···अब प्रति पल अपने परम-पिता की अनोखी गोद में विश्राम करो। ये बोल सदा प्रतिक्षण कानों में गूँजते रहें कि "ये दिन फिर नहीं आयेंगे"। □

इस संसार में लोभी लोगों की पहले गत बनेगी, पीछे गति होगी

एक बार की बात है कि किसी घर में एक बिल्ला घुस गया। उसने रसोई में ताँबे का एक कलश दूध से भरा हुआ देखा। वह बहुत ही खुश हुआ। सोचने लगा कि आज तो मेरे भाग्य जाग गए हैं। आज मुझ अकेले को कलश-भर दूध पीने को मिलेगा। लोभ के वश होने के कारण उसको अपनी रक्षा का भी विचार न रहा बल्कि दूध पीने की खुशी में वह सब सुध-बुध भूल गया, पीते-पीते उसने गरदन तक अपना सारा मुँह कलश में डाल दिया कि आज तो खूब मौज से आखरी बूँद तक पी डालूँगा। उसने दूध तो पी डाला परन्तु उस बेचारे की गरदन बाहर न निकलती थी। वह बहुत कोशिश करता परन्तु उसका सिर कलश में अटका ही रहा। वह तो कलश को छोड़ना चाहता था परन्तु अब कलश उसे नहीं छोड़ता था। वह कलश को लिए इधर-उधर स्वयं को छुड़ाने की कोशिश करता परन्तु उसके छूटने का यही साधन था कि या तो कलश तोड़ा जाय या वह स्वयं के देह को उससे न्यारा करे। आखिर वह चिन्तित हो गया कि अब तो पकड़ा जाऊँगा और कलश को चट करके झूठा करने का दण्ड मिलेगा फिर कहीं जाकर मुक्ति मिलेगी। अन्त में वही हुआ। मालिकों ने उसकी खूब गत बनाई और फिर कहीं उसकी गति हुई।

ठीक यही हाल मनुष्य का है। ताम्र युग (Copper Age) अथवा द्वापर युग की सृष्टि में उसने इस संसार में भरे हुए विषय-पदार्थों को देखकर सोचा कि चोरी-चोरी से मैं यह सारे वैभव भोगकर तप्त हो जाऊँ। लोभ के वश होकर उसने

(शेष पृष्ठ २८ पर)

बसवन बागेवाडी में कर्नाटक के विद्युत शक्ति मंत्री भ्राता जे० एस० देशमुख को ब्र० कु० महादेवी श्री लक्ष्मी नारायण का चित्र सौगात देते हुए ।

दादी प्रकाश मणि जी बम्बई मुलुन्ड के एक विशाल सार्वजनिक समारोह में दिखाई दे रही हैं ।

बिजापुर में नगराध्यक्ष मान्यश्री जान्वेकर जी को प्रदर्शनी के चित्रों पर समझाती हुई ब्र० कु० रमा बहन ।

विराट नगर, नगर पंचायत में भाषण के पश्चात् ब्र० कु० सावित्री जी कुछ पत्रकारों के साथ खड़ी हैं ।

राजपीपला में प्रदर्शनी के चित्रों पर ब्र० कु० उषा राजपीपला के युवराज रघवीर सिंह जी को परमात्मा का

लहार सेवा केन्द्र की तरफ़ से ब्र० कु० चिरंजी लाल कन्या डिग्री कालेज भिण्ड में चित्र पर आत्मा का परिचय

"फिर काहे को प्रभु भजें"

(ले०—ब्र० कु० मुन्नीलाल, सिकन्द्राबाद, आन्ध्रा प्रदेश)

सबको मिलता कर्म फल, कहते चतुर सुजान।
फिर काहे को प्रभु भजें, पूँछे एक विद्वान॥
पूँछे एक विद्वान, दिखाई निज विद्वत्ता।
ज्ञान जरूरी नहीं प्रभु का, नहीं प्रभू की सत्ता॥१॥

बात चल पड़ी ज्ञान की, बोला मैं अड़ियाय।
बिना ज्ञान के कुछ नहीं, सुनिए प्यारे भाय॥
सुनिये प्यारे भाय, ज्ञान से ही सब होता।
बिना ज्ञान के भ्रात, कहीं भी कुछ न होता॥२॥

जो कुछ आप देखते, जहाँ भी दृष्टि जाती।
सब ही कुछ तो रचित ज्ञान से, क्यों बुद्धि भरमाती॥
क्यों बुद्धि भरमाती, संशय मन में, क्यों है लाते।
काहे को कर्मों की गति को, बार-बार झुँठलाते॥३॥

बिना कर्म के फल न मिलता, यही कर्म का राज।
कर्मों के करने का प्रेरक, मन की है आवाज॥
मन की है आवाज, जिसे बुद्धि करती निर्देश।
कर्म वही फिर होता है, ऐसा प्रभू उपदेश॥४॥

बुद्धि की शुद्धि पर निर्भर, अच्छे कर्म का होना।
फल भी वैसे ही मिलता है, जैसे बीज का बोना॥
जैसे बीज का बोना, बुद्धि शुद्ध बने प्रभु संग में।
सदा दिव्यता आती उसमें, रंगती है प्रभु रंग में॥५॥

कर्मों का आधार तो मन है, मन आधारित बुद्धि पर।
सत्य कर्म निर्भर होता है, मति की उत्तम शुद्धि पर॥
मति को उत्तम शुद्धि पर, प्रभाव करे प्रभु याद।
कर्म फल वैसे मिलता है, नहीं करे फरियाद॥६॥

□

आप कितने बुद्धिमान हैं ?

ब्रह्मकुमारी कमलमणि, कृष्णा नगर दिल्ली

नीचे हम १० प्रश्न दे रहे हैं ! प्रत्येक प्रश्न के नीचे उसके चार उत्तर हैं, अब आप ने उन दिये गये चारों उत्तरों में से एक सही चुनना है, और फिर अन्त में दिये गये सही उत्तरों से उनका मिलान करना जो कि इसी पृष्ठ के नीचे ही दिये गए हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दिए गये उत्तरों से मिलान करने के पश्चात आप स्वयं ही इस बात का फैसला कर सकते हैं, कि आप कितने बुद्धिमान हैं।

प्रश्न

१. हम ब्राह्मण बच्चों को शिव बाबा ने कौन-सा सरनेम दिया।
   (क) मास्टर सागर (ख) शिव वंशी ब्रह्माकुमार व कुमारी
   (ग) ब्रह्माकुमार व कुमारी (घ) मा० ब्रह्मा

२. भक्ति मार्ग में ब्रदरहुड (brotherhood) का हमारा कौन-सा यादगार मनाया जाता है ?
   (क) रक्षा बन्धन (ख) भैया द्वोयज (ग) होली (घ) भरत मिलाप

३. द्वापर युग से कौन से दो पुर अलग-अलग हो गये ?
   (क) धर्म और राज्य (ख) सुख और शान्ति
   (ग) सद्गति और दुर्गति (घ) आत्मा और शरीर

४. मास्टर सर्व शक्तिवान का वर्सा क्या है ?
   (क) मायाजीत (ख) २१ जन्मों की प्रालब्ध (ग) विकर्माजीत (घ) सर्व शक्तियाँ

५. पवित्रता की उच्चतम स्टेज कौन-सी है ?
   (क) मन, वचन व कर्म में पवित्रता (ख) डबल अहिंसक
   (ग) रीयल्टी अर्थात् सच्चाई (घ) सम्पूर्ण पवित्र

६. हम ब्राह्मण बच्चों का ताजपोशी दिवस कौन-सा है ?
   (क) जिस दिन लक्ष्मी नारायण गद्दी पर बैठेंगे (ख) जिस दिन से भगवान का बच्चा बना
   (ग) १८ जनवरी

७. कृष्ण की आत्मा का २१वाँ जन्म कौन-सा है ?
   (क) प्रजापिता ब्रह्मा (ख) विक्रमादित्य राजा
   (ग) विकर्माजीत राजा (घ) त्रेता युग का अन्तिम जन्म

८. हम ब्रह्माण आत्माओं का अजपाजाप कौन-सा है ?
   (क) एक बाप दूसरा न कोई (ख) बाबा-बाबा (ग) मनमनाभव (घ) मैं आत्मा हूँ

९. ग्रेट-ग्रेट ग्रेण्ड फादर किसको कहा जाता है ?
   (क) शिव बाबा (ख) ब्रह्मा (ग) प्रजापिता ब्रह्मा (घ) श्री विष्णु

१०. शिव बाबा ने हम बच्चों को अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए पुरुषार्थ करने की कौन-सी तिथि निश्चित की है ?
   (क) १८ जनवरी (ख) संगमयुग के ४०-५० वर्ष
   (ग) अभी नहीं तो कभी नहीं (घ) समर्थी दिवस

उत्तर

१. शिव वंशी ब्रह्माकुमार २. भरत मिलाप ३. धर्म और राज्य ४. सर्व शक्तियां ५. रीयल्टी अर्थात् सच्चाई ६. १८ जनवरी ७. विक्रमादित्य राजा ८. एक बाप दूसरा न कोई ९. प्रजापिता ब्रह्मा १०. अभी नहीं तो कभी नहीं।

सिडनी में ब्र० कु० जगदीश का 'अन्ने उन्न आन टू बी एल गवर्नमेंट रडियो द्वारा, इन्टरव्यू लिया गया।

जकार्ता में सूचना विभाग के महानिर्देशक भ्राता सुकार्नो जी से ब्र० कु० जगदीश जी वार्तालाप करते हुए।

जकार्ता में डा० वी० प्रकाश, निर्देशक यूनेस्को से भ्राता जगदीश जी ज्ञान चर्चा करते हुए।

ब्र० कु० जगदीश चन्द्र जी सिडनी में कई वैज्ञानिकों से मिले। वे चित्र में माईक बारलोट्टी तथा ब्र० कु० स्टैला के साथ खड़े हैं।

भ्राता पुडजा, एम० ए० महानिर्देशक हिन्दू तथा बुद्ध धर्म, जकार्ता में ब्र० कु० जगदीश जी के साथ ज्ञान वार्तालाप करते हुए। ब्र० कु० जगदीश जी ने उन्हें शान्ति की अनुभूति कराते हुए।

फरीदाबाद सेवा केन्द्र के वार्षिक उत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित प्रेस कान्फ्रेंस के बाद ब्र० कु० उषा, शुक्ला भ्राता विश्वानाथ, ब्र० कु० सुन्दरलाल तथा ब्र० कु० वृजमोहन और गणमान्य जन खड़े हैं।

किसी की बातों में न आना

ले०-ब्र० कु० चक्रधारी, दिल्ली

प्यारे बच्चो, आज हम तुम्हें एक ऐसी कहानी सुनायेंगे जिससे यह शिक्षा मिलती है कि हमें कसी की चिकनी-चुपड़ी बातों में नहीं आ जाना चाहिए। अपनी बुद्धि पर भरोसा रख दृढ़ता से कर्म करना चाहिए वर्ना धोखा हो जाता है। किसी कवि ने कहा है न—

मीठी-मीठी बातों से बचना ज़रा
दुनिया के लोगों में है जादू भरा

यहाँ मीठी-मीठी से तात्पर्य कोई मधुरता भरे शब्दों से नहीं परन्तु ऊपर से मीठी और अन्दर से कड़ुवी बातों से सावधान रहने की ज़रूरत है। तो आज हम आपको ऐसी ही कहानी सुनायेंगे जिसमें एक बच्चा अपने शुभ चिन्तक पिता की बात को भूल ठगों की बातों में आ जाता है और धोखा खा जाता है।

यह कहानी एक गाँव की है। एक बार उस गाँव में पशुओं का बहुत विशाल मेला लगा। दूर-दूर से लोग अपने पशुओं को उस मेले में बेचने के लिए आए हुए थे। यह मेला गाँव की बस्ती से कुछ दूरी पर था जिसको एक सुनसान-सी सड़क जाती थी। उसी गाँव में रहने वाले एक व्यक्ति ने अपने किशोरावस्था में पहुँचे हुए बेटे को कहा—"देखो बेटा, अब तुम बड़े होते जा रहे हो। धीरे-धीरे तुम्हें भी काम सीखना चाहिए ताकि बड़े होने तक तुम अपने पाँव पर खड़े हो सको।" फिर उसने एक गाय के बछड़े की ओर इशारा करते हुए कहा कि आज तुम इसे ले जाओ और मेले में ले जाकर इसे उचित दाम पर बेच आओ। धीरे-धीरे तुम अनुभवी हो जाओगे, तो बड़े पशुओं को भी बेचने का कार्य संभाल सकोगे।

बेटे ने अपने पिता की बात सुन 'हाँ' में सिर हिलाया और नाश्ता आदि कर बछड़े को अपने साथ लेकर मेले की ओर चल दिया। उसके मन में एक नई उमंग थी कि आज वह भी पिता के समान व्यापारी का काम करके आएगा। वह बहुत खुशी-खुशी कोई देहाती गीत गुनगुनाता हुआ आगे बढ़ता जा रहा था।

वह अपने घर से कुछ ही दूर गया था कि रास्ते में उसे एक आदमी मिला। वह बोला—"ए बच्चे, यह मेमना कितने में दिया ?"

बच्चा—"क्या कहा ? मेमना ? अरे, यह मेमना थोड़े ही है, यह तो गाय का बछड़ा है। मैं इसे मेले में बेचने के लिए जा रहा हूँ।" इतना कहकर वह हँस दिया और आगे बढ़ गया। अन्दर ही अन्दर सोचता जा रहा था कि इतना बड़ा आदमी होकर इसे यह भी पता नहीं कि यह बछड़ा है या मेमना। फिर बछड़े की पीठ पर हाथ फेर कर उसे प्यार करने लगा और आगे चल दिया।

थोड़ी ही दूर आगे बढ़ा था कि एक आदमी और मिला। उसने पूछा—"अरे बच्चे, यह मेमना कितने पैसे में देगा ?"

बच्चा आश्चर्य से उसे देखने लगा और बोला—"आपको यह भी पता नहीं चलता कि यह

मेमना है या कुछ और है ! यह तो बछड़ा है, मेमना नहीं। मैं मेले में इसे बेचने के लिए ले जा रहा हूँ।"

वह आदमी हँसने लगा। कहने लगा—"अरे, तुम भी कितने भोले हो। तुम्हें यह बछड़ा दिखाई देता है ! बेटा, यह तो मेमना है मेमना। बोलो, कितने में दोगे ?"

बच्चा कभी बछड़े को देखता और कभी उस व्यक्ति को। फिर उसे अपने पिता की स्मति आई कि उन्होंने भी यही कहा था कि यह बछड़ा मेले में जाकर बेच आओ। यह स्मृति आते ही उस व्यक्ति से बोला—"नहीं, नहीं यह मेमना नहीं, बछड़ा है। मेरे पिता ने मुझे कहा था कि तुम इस बछड़े को मेले में बेच आओ।"

व्यक्ति बोला—"ठीक है, तुम्हारी मर्जी। मेले में तुम इस मेमने को ले जाकर बछड़ा कहोगे तो लोग तुम्हारी हँसी उड़ायेंगे।" इतना कहकर वह व्यक्ति वहाँ से चल दिया।

वह बच्चा भी कुछ सोचता-सा धीरे-धीरे कदम आगे बढ़ा रहा था। उसके मन में द्वन्द्व चल रहा था। वह समझ नहीं पा रहा था कि पिताजी ने ठीक कहा है अथवा इन दो व्यक्तियों ने। दोनों ही कहते हैं कि यह मेमना है और पिताजी ने कहा था कि यह बछड़ा है। इस प्रकार वह बहुत धीमी गति से मेले की ओर बढ़ रहा था। सोच रहा था जो होगा देखा जाएगा। मेले में तो पहुँचूँ। वहाँ सत्य का मालूम पड़ जाएगा।

कुछ दूर जाने पर एक और व्यक्ति उसे मिला। उसने बच्चे को आवाज लगाकर रोका और पूछा—"बेटा, यह मेमना किस दाम में बेचोगे ?"

यह वाक्य सुनते ही वह बच्चा तो वहीं का वहीं खड़ा रह गया। उसे उत्तर देने से पूर्व अपना सिर खुजाने लगा और कुछ सोचता हुआ-सा पाँव से मिट्टी कुरेदने लगा।

उस व्यक्ति ने फिर पूछा—"यह मेमना कितने में दोगे ?"

बच्चे ने सोचा कि ऐसा कैसे हो सकता है कि तीन-तीन व्यक्ति बछड़े को मेमना बतायेंगे, अवश्य ही यह मेमना होगा। हो सकता है पिताजी ने गलती से इसे बछड़ा कह दिया होगा वर्ना तीन आदमी कैसे इसे मेमना बताते। फिर उसने सोचा कि अब इस मेमने को कहाँ इतनी दूर मेले में बेचने जाऊँ। जबकि उसका ग्राहक यहाँ ही मिल रहा है तो इतनी दूर जाने का क्या फायदा।

व्यक्ति बच्चे के चेहरे के हाव-भाव को पढ़ रहा था। उसने फिर कहा—"बेटा, क्या सोच रहे हो ? जल्दी बोलो न, यह मेमना कितने में दोगे ? मुझे जल्दी घर जाना है।"

बच्चे ने कहा—"पच्चीस रुपये में'

उस व्यक्ति ने उसे पच्चीस रुपये दिये और अपने साथ बछड़े को लिया और अपने घर की ओर चल दिया। वह बच्चा भी पच्चीस रुपये अपने कुर्ते की जेब में डालकर बड़ी खुशी-खुशी से, तेज कदमों से घर की ओर मुड़ गया। वह सोच रहा था कि आज पहले ही दिन वह अपने कार्य में सफल हो गया और मेले में पहुंचने से पूर्व ही उसने मेमने का सौदा कर लिया।

शीघ्र ही वह अपने घर पहुँच गया। उसके पिता ने उसे जल्दी ही वापस आया देखकर पूछा—"बेटा, क्यों क्या हुआ ? जल्दी कैसे आ गये ?क्या कुछ भूल गये थे ?"

बेटा—"पिताजी नहीं, मैंने रास्ते में ही उस मेमने का सौदा कर लिया और उसे पच्चीस रुपये में बेच आया।"

पिताजी ने आश्चर्य चकित होकर कहा—"क्या···? मेमना···? वह मेमना थोड़े ही था, वह तो बछड़ा था। क्या तुम उसे मेमने के भाव में बेच आये ?"

बेटे ने कहा--"नहीं पिताजी, वह तो मेमना था, बछड़ा नहीं। मुझे रास्ते में तीन व्यक्ति मिले।

(शेष पृष्ठ २० पर)

सर्वश्रेष्ठ हॉबी

ले०-ब्र० कु० सुधा, शक्ति नगर, दिल्ली

दैनिक कार्य व्यवहार के अलावा हरेक व्यक्ति की कोई-न-कोई हॉबी (शौक) अवश्य होती है जो जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। किसी का शौक पूरा होने में यदि कोई रुकावट हो तो उसकी खुशी गुम होने लगती है। हॉबीज़ (Hobbies) अथवा शौक भी कई प्रकार के होते हैं। उनमें से कुछ शौक तो ऐसे होते हैं जिससे मनुष्य की बुद्धि का विकास होता है और वह उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर बढ़ता जाता है। ज्ञान-वर्द्धक पुस्तकें एवं साहित्य पढ़ना इसी किस्म का शौक है। परन्तु यदि किसी को अश्लील पुस्तकें, नॉवल आदि पढ़ने का शौक हो तो वह उसके चारित्रिक पतन का कारण बन जाता है। इसी किस्म के अन्तर्गत कुछ और भी शौक आ जाते हैं जिससे मनुष्य के भौतिक जगत के ज्ञान में वृद्धि होती है जैसे विभिन्न देशों की डाक-टिकटों का संग्रह करना, कुछ महान विभूतियों के फोटोज़ इकट्ठे करना अथवा देश-विदेश में होने वाली घटनाओं से परिचित रहने के लिए समाचार-पत्र पढ़ना अथवा समाचार सुनना आदि-आदि।

कुछ व्यक्तियों के शौक ऐसे होते हैं जिससे उनमें कला का विकास तो होता है परन्तु वे बहुत खर्चीले होते हैं। अगर उस शौक को पूरा करने के लिए उनके पास इतना धन न हो तो वे गलत माध्यम से भी धन कमाने अथवा किसी भी प्रकार धन का इन्तज़ाम करने का पुरुषार्थ करते हैं। नतीजा यह होता है कि एक शौक को पूरा करने के लिए वे कई गलत आदतों के शिकार हो जाते हैं।

कुछ शौक शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक विकास करने वाले होते हैं जैसे विभिन्न प्रकार के खेलों में हिस्सा लेना।

इस प्रकार अगर विभिन्न प्रकार के शौक (Hobbies) की सूची बनाई जाए तो बहुत लम्बी बन सकती है परन्तु प्रश्न यह उठता है कि सर्व-श्रेष्ठ शौक अथवा हॉबी (Hobby) कौन-सी है ?

परमपिता परमात्मा शिव का कथन है—"स्वयं को सर्वगुण सम्पन्न बनाना और फिर अन्य को सम्पन्न बनाना ही सर्वश्रेष्ठ हॉबी है।" आप सोचेंगे कि इस हॉबी को सर्वश्रेष्ठ क्यों कहा गया है। बुद्धिवानों की बुद्धि, ज्ञान के सागर, सर्वज्ञ, त्रिकालदर्शी परमात्मा के ये महावाक्य हैं तो अवश्य ही इनमें गहराई होगी। वह गहराई क्या है, अब हम उस पर विचार करेंगे।

परमात्मा के इस कथन को हम दो भागों में बाँट सकते हैं—(१) स्वयं को सर्वगुण सम्पन्न बनाना तथा (२) अन्य को सर्वगुण सम्पन्न बनाने की सेवा करना अथवा पुरुषार्थ करना। इन दोनों पर अलग-अलग विचार करने से आप पायेंगे कि जिसकी यह हॉबी हो, उसके लिए यह कितनी लाभकारी सिद्ध होती है।

पहले हम इस शौक के प्रथम भाग—'स्वयं को सर्वगुण सम्पन्न बनाना' इसी को ही ले लेते हैं।

यही सच्चा सौन्दर्य है—कई मनुयों का शौक होता है कि वे सदा अपने को सजाते रहते हैं अथवा शृंगार करते रहते हैं। प्रतिदिन निकलने वाले नये-नये प्रसाधनों का वे इस्तेमाल करते हैं ताकि वे सुन्दर दिखाई दें और लोगों के आकर्षण का एक केन्द्र बन सकें। परन्तु यह तो सब जानते हैं कि शारीरिक सुन्दरता तो चार दिन की चांदनी है। असली सुन्दरता तो मनुष्य के गुणों से होती है। किसी ने कहा है न—ब्यूटी इज़ स्किन डीप (Beauty is skin deep) अर्थात् गुणवान मनुष्य ही सही अर्थों में सुन्दर है और अवगुणी ही कुरूप है। हमारा कहने का यह भावार्थ नहीं कि मनुष्य को शारीरिक स्वच्छता और सुन्दरता पर ध्यान नहीं देनी चाहिए परन्तु इसके साथ-साथ आन्तरिक सुन्दरता का भी ध्यान रखना चाहिए। और अगर हमारी यह हॉबी है कि हम स्वयं को सर्वगुण सम्पन्न बनाना चाहते हैं तो सुन्दरता रखना हमारे

लिए अत्यन्त सहज हो जाता है।

लोकप्रिय बनाने का यह साधन है—कुछ शौक ऐसे होते हैं जो उस शौक रखने वाले व्यक्ति को जगत में नाम, मान, शान देने वाले होते हैं परन्तु समय का पासा पलटता है, उन व्यक्तियों का स्थान कुछ उनसे भी माहिर लोग ले लेते हैं, तो उनका नाम इतिहास के पन्नों में लुप्त हो जाता है। आजीवन अथवा उसके भी उपरान्त कोई व्यक्ति किसी शौक के कारण प्रसिद्धि अथवा लोकप्रियता नहीं प्राप्त कर सकता। परन्तु जिस व्यक्ति की यह हॉबी हो, वह दूसरों के भी गुण ही देखता है, अवगुणों का न वह चिन्तन करता है और न ही उसकी अवगुण-दृष्टि होती है। सभी के गुण देखने से उसके मन में सभी के प्रति स्नेह और सम्मान की भावना बनी रहती है और जब वह सबको स्नेह और सम्मान देता है तो 'स्नेह दो और स्नेह लो' (Give Love and Get love) 'सम्मान दो और सम्मान पाओ' (Give respect and Get respect) की उक्ति के अनुसार वह भी सबके स्नेह और सम्मान का पात्र बन जाता है।

सुख, शान्ति व खुशी की प्राप्ति—मनुष्य के जो भी शौक होते हैं, वह उसे खुशी प्रदान करते हैं। परन्तु वह खुशी स्थाई रूप से कायम रहे, यह संभव नहीं। 'गुण सुख देते हैं और अवगुण दुख देते हैं'—यह शत-प्रतिशत सत्य कहावत है। अतः सर्वगुण सम्पन्न बनने की हॉबी रखने वाले व्यक्ति के जीवन में सुख, शान्ति व खुशी बनी रहती है। इसका प्रमाण है देवी देवताओं का जीवन। सर्व गुण सम्पन्न होने के कारण ही तो उनका जीवन सुख, शान्ति व खुशी से भरपूर रहता है और इसी-लिए तो मूर्तिकार व चित्रकार उनकी मूर्तियों में व चित्रों में इन प्राप्तियों को दर्शाते हैं।

अब हम परमात्मा पिता द्वारा बताये गए शौक (Hobby) के दूसरे भाग—अन्य को सर्वगुण सम्पन्न बनाने की सेवा करना—पर विचार करते हैं।

बौद्धिक विकास—कई शौक मनुष्य की बुद्धि का विकास करने वाले होते हैं परन्तु जिसको अन्य को सम्पन्न बनाने का शौक होता है, उसकी बुद्धि का विकास उनसे कई गुणा अधिक होता है। क्योंकि न केवल वह अपने उदाहरण से अथवा अपने जीवन से अनेकों को गुणवान बनाता है परन्तु उनकी ज्ञान से सेवा करके भी उन्हें गुणवान बनाता है। उसे हर कदम पर यह सावधानी बरतनी पड़ती है कि कहाँ उसे कैसा व्यवहार करना है, कैसी बात करनी है, क्या बात समझानी है, किस प्रश्न का उत्तर कैसे देना है और इस प्रकार उनकी बुद्धि विकसित हो जाती है।

समाज उत्थान इसी से संभव—मनुष्य के शौक ऐसे होने चाहिएं जिससे उसके नैतिक उत्थान के साथ-साथ सामाजिक उत्थान भी हो। जो व्यक्ति स्वयं को सम्पन्न बनाने के साथ-साथ अन्य को सम्पन्न बनाने की सेवा में लग जाता है वह न केवल अपने चरित्र का उत्थान करता है परन्तु अन्य के भी चरित्र का उत्थान करने में सहयोगी होता है। जिस देश के वासियों का चरित्र महान होता है, वह देश सदा उन्नति के शिखर पर अवश्य ही पहुंच जाता है। अन्य जितने भी प्रकार के शौक हैं उनसे मनुष्य का स्वयं का किसी एक दृष्टिकोण से विकास तो होता है अथवा देश को मान सम्मान तो मिल सकता है (जैसे किसी देश के माहिर खिलाड़ियों के कारण देश को मान मिलता है) परन्तु उनसे देश वासियों का चारित्रिक उत्थान नहीं होता। परन्तु परमात्मा द्वारा बताई गई हॉबी तो विश्व-कल्याण कर सकती है।

तो अब आप ही बताइये, यह हुई न सर्वश्रेष्ठ हॉबी जिससे स्वयं का जीवन भी श्रेष्ठ बने तथा सर्व का जीवन भी श्रेष्ठ बने। अतः अगर आपको कोई अन्य प्रकार के शौक भी हों तो इस शौक (Hobby) को भी अपने जीवन का हिस्सा बना लीजिए। इससे आप मन पसन्द, लोक पसन्द व प्रभु पसन्द तीनों ही सर्टीफिकेट लेने के अधिकारी बन सकते हैं।

□

अनोखी अनुभूति—

अंधकार से प्रकाश की ओर

ब्र० कु० ओमप्रकाश 'पौनियां', अलीगढ़

बत्तीस वर्षीय जीवन के विविध संघर्षों एवम् अन्तरद्वन्द्वों के घात-प्रतिघात के वातावरण में जीवन यापन करने के उपरान्त स्वतः ही मन में स्वांतः सुखाय की प्रेरणा जाग्रत हुई, जिसके कारण चंचल और चलायमान प्रवृत्ति को सरल एवम् सरस बनाने के अनेक उपक्रम किए, किन्तु सफलता हाथ न लगी। दृष्टि वृत्ति सब पूर्व की भाँति ही बनी रही और ऐसा प्रतीत होने लगा जैसे—मेरा जीवन ही हाथ से निकल गया हो। उसका मूलाधार ही ध्वस्त होकर उसमें सुरंग बन गयी हो। अस्तु! चित्त की वृत्तियाँ और मन का कूड़ा-करकट जब मैं न निकाल सका, असमर्थ रहा तभी दैवयोग से नई आशा की एक किरण प्रस्फुटित हुई। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के भाई से साक्षात्कार हुआ। जिसके माध्यम से मुझे सेवाकेन्द्र अलीगढ़ की मुख्य संचालिका बहिन जी से सत्संग कर ज्ञान श्रवण करने का सौभाग्य मिला। प्रथम तो मुझे उनमें कुछ विशेषता दृष्टिगोचर न हुई क्योंकि उस समय तो पत्रकार, लेखक व उपन्यासकार होने का नशा मुझ पर सवार था। इससे मुक्त होता तो शायद सत्संग से पूर्व ही एकाग्रचित्त हो—शाँति भाव से उनकी वाँणी द्वारा 'शिव बाबा' के महावाक्य श्रवण कर लाभान्वित होता। व्यर्थ के कटाक्षपूर्ण शब्दों का अतिशय प्रयोग एवम् अपने अहम् का प्रदर्शन उनके समक्ष न करता: खैर! इतना कुछ हो जाने के उपरान्त भी बहिन जी ने ओजपूर्ण किन्तु स्मित-भाव से सत्संग का क्रम बनाये रखा और कहा—

"जीव जिस डोली में बैठा जीवन यात्रा कर रहा है उसका निर्माण ही जीर्ण-शीर्ण बांसों से हुआ है। उसको ढोने वाले ग्यारह कहारों (पांच कर्मेन्द्रियाँ, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और एक मन) को नहीं मालूम कि उनके गंतव्य का मार्ग कौन-सा है। वह तो चले जा रहे हैं, चलते चले जा रहे हैं। कहाँ पहुँचेंगे? इसका भान उन्हें नहीं। भान के लिए तो उन्हें कुछ खोना पड़ेगा। पहले अपने को जानना पड़ेगा। मन के संकल्पों को बुद्धि द्वारा निर्णीत करना पड़ेगा। तभी तो अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच कर आंतरिक सुखानुभूति हो सकेगी।"

उक्त पंक्तियाँ मेरे मानस पटल पर ऐसे अंकित हो गईं जैसे लोहे की गर्म सलाखों से किसी ने हृदय पर रेखा खींच दी हो। मुझे लगा जैसे मैंने कुछ पा लिया। खोई हुई वस्तु मिल गई। चर्म चक्षुओं पर पड़ा पर्दा हट गया। प्रकाश के आते ही अंधकार किनारा कर गया। फिर क्या था? उसी दिन से नियमित रूप से सुबह और सायंकाल सेवाकेन्द्र पर जाने लगा।

साप्ताहिक पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात ज्ञान मुरली का रसास्वादन किया। ज्ञान मुरली का रंग तो मेरी मानस की चादर पर ऐसा चढ़ा कि अब यदि छुड़ाने का प्रयत्न भी करूँ तो भी छूटने वाला नहीं है। अस्तु, इतने पक्के रंग में रंग जाने का परिणाम यह हुआ कि मुझे पचपन दिन के बाद ही बाप-दादा की क्रीड़ा स्थली एवम् चरित्र भूमि 'माउन्ट आबू' जाने का शुभावसर मिल गया।

बहिन जी के निर्देशन में हमारा ग्रुप आबू पर्वत पहुँचा। वहाँ पहुँच कर बाबा का कमरा, पांडव भवन, ज्ञान-विज्ञान भवन तथा ओउम् शांति भवन आदि देखा। तभी हमारे साथ गईं एक माता ने मुझसे पूछा—"ओउम् प्रकाश! तुम्हारी दृष्टि में 'ओउम् शाँति भवन' कसा रहा?" मैंने सहज में ही उत्तर दे दिया—माताजी ऐसे तो दिल्ली में विज्ञान भवन आदि बहुत अच्छे हैं। कोई नवीनता भी दृष्टिवंत नहीं हुई और न ही कोई वस्तु ही विशेष आकर्षण का केन्द्र बनी। माताजी को जैसे झटका लगा। एकदम से कह बोलीं, "जाट हो न—तुम सुधरने वाले नहीं।" अब आप कुछ

भी कहें। असत्य को स्वीकार करने की मेरी आदत नहीं। झूठे ही कैसे कह दूँ। अन्तरात्मा की सत्य परख ही मेरे लिए सर्वोपरि है। बिना कुछ अनुभूति हुए मेरे द्वारा व्यर्थ कहना सम्भव नहीं—मैंने कहा।

वार्तालाप चल ही रहा था कि बहिन जी आ गईं और कल प्रातःकाल चार बजे योग के लिए 'ओउम् शांति भवन' जाने का निर्देश दिया। पहले तो कुछ अजीब-सा लगा, फिर सोचने लगा—धूप चढ़े, सूर्यनारायण के सर पर आने पर तो इन चर्म चक्षुओं के कपाट खलते हैं। भला चार बजे प्रातःकाल योग में सम्मिलित कैसे होंगे। बहिन जी से तो कुछ न कहा, परन्तु मन में संकल्प अवश्य आया कि प्रातः अमृत वेले जागरण कैसे होगा ?

पहले दिन तो किसी कारण से जागकर योग में सम्मिलित हो गये। किन्तु दूसरे दिन एक विलक्षण घटना घटी। **ठीक तीन बजे प्रातः एक आवाज आई। कितनी कर्णप्रिय व मधुर आवाज थी वह।** उस आवाज को मेरी अन्तरात्मा ही केवल अनुभव कर सकती है। मुख द्वारा वर्णन करना, लेखनी द्वारा लिखना मेरे वश की बात नहीं। फिर सोचा शायद कल बहिन जी कह रही थीं। हो सकता है उन्होंने किसी से ऐसा करने के लिए कह दिया हो। संदेह के निवार्णार्थ अपने ग्रुप के अन्य मित्रों से पूछा, किन्तु उत्तर नकारात्मक मिला। फिर भी बहिन जी से पूछने की जिज्ञासा बनी रही। अन्ततोगत्वा-संकोच रहते भी उनसे पूछ बैठा—सकारात्मक उत्तर उनका भी नहीं था।

दूसरे दिन प्रातः फिर उसी घटना की पुनरावृत्ति हुई। अब तो नित्य-प्रति ही यह घटनाचक्र बन गया। प्रतिदिन ठीक तीन बजे वही आवाज आने लगी जो आज तक आती है। जब इस परिप्रेक्ष्य में मैंने अन्यों को बताया तो उन्होंने विश्वास दिलाते हुए कहा कि 'बाबा' आपके द्वारा कुछ कराना चाहते हैं। आप बाबा के अति लाडले-प्यारे बच्चे हो। मेरी कुछ समझ में तो नहीं आया, लेकिन फिर बाबा के कमरे में जाकर मैंने इतना अवश्य कहा—"बाबा ! अब मैं अपने को तुम्हारे चरणों में समर्पित करता हूँ।" ऐसा करने की ही देर थी, मुझे अहसास हुआ कि **मैं बाबा के कंधे पर बैठा हूँ और बाबा मुझे फूलों के बगीचे में घुमा रहे हैं।**

जागने की विलक्षणता की बात अब समझ में आ गई। इन दोनों अनुभूतियों के सुखानंद का अतिशय अनुभव मेरे मानस पटल पर स्थाई छाप छोड़ गया। एक के बाद एक नए-नए अनुभव होने लगे।

सात दिन का यह सुखद एवम् आनन्ददायक समय यूँ ही व्यतीत हो गया। दो हजार देश-विदेश से आये भाई-बहिनों की उपस्थिति भी वहाँ मालूम न पड़ी। आवाज का, शोर का कहीं नामोनिशान भी नहीं था। सबका सामान ऐसे ही बिना ताले का जहाँ का तहाँ रखा रहता था। कमाल था बाबा का, किसी की सुई जैसी वस्तु भी गुम नहीं हुई।

इस प्रकार अनेक अनुभवों के उपरान्त हम घर लौट आये। घर आकर मेरी दिनचर्या प्रारम्भ हुई। ठीक तीन बजे आवाज आई। मैंने विस्तर छोड़ा और दैनिक क्रियाओं से निवृत होकर भ्रमण पर निकल गया। मेरी पत्नी ने अवश्य मध्य में टोका। "क्यों ? तबियत खराब है—कैसे खटपट कर रहे हो ?" मैंने शांत स्वर में उन्हें कहा, "ऐसा कोई कारण नहीं है। दूसरे दिन जब फिर तीन बजे जगकर दैनिक क्रियाओं से निवृत हो भ्रमण के लिए जाने लगा तो श्रीमती जी भी साथ हो लीं। तीसरे और चौथे दिन तो मेरे बच्चे भी चार बजे अमृत-बेले 'बाबा' से योग लगाने लगे। भ्रमण में मेरे साथी भी बन गये। **विकारी जीवन निर्विकारिता की ओर बढ़ा। अब तो मेरे सम्पूर्ण घर का वातावरण ही परिवर्तित हो गया। घर के अन्य सभी सदस्य भी अमृत वेले का आनन्द लेने लगे। घर मन्दिर जैसा बन गया है। प्रातः चार बजे से ही टेप द्वारा मधुर एवम् कर्णप्रिय बाबा के गीत बजने प्रारम्भ हो जाते हैं।**

मुझे अब ऐसा प्रतीत होता है जैसे अनंत का खजाना मुझे मिल गया है। □

इतिहास की दृष्टि से पवित्रता का मूल्य

ब्र० कु० रमेश, गामदेवी, बंबई

जब मैं विदेश यात्रा पर गया था तब मेक्सिको शहर में दूरदर्शन केंद्र (Television) पर मेरी मुलाकात ली और प्रश्नोत्तर भी रिकार्ड किये। उन्हों को हमारे बहन-भाइयों ने बताया था कि रमेश भाई को विशेष सतयुग, इतिहास आदि बातों में बहुत ही दिलचस्पी है। इसलिये टी० वी० मुलाकात लेने वाले ने मुझसे यही प्रश्न पूछा कि 'इतिहास हमें क्या शिक्षा देता है ?'

प्रश्न बहुत ही रुचिकर था। वास्तविकता में इतिहास हमें बहुत कुछ सिखाता है परंतु इतिहास यह भी बताता है कि मनुष्य इतिहास को ठोकर लगाकर वही गलतियां फिर से करता है। विश्व में अनेक प्रकार की श्रेष्ठ संस्कृतियां हो गईं। भारत तथा विदेशों का भूतकाल इन्हीं श्रेष्ठ संस्कृति तथा समाज के इतिहास से भरा हुआ है। बेबीलोनियन, सुमेरियन, मिश्र, ग्रीस, रोमन इत्यादि की संस्कृति, ऐसी, विदेश में, ३२ श्रेष्ठ संस्कृतियां और समाज रचना हो गई जो एक काल में उन्नति और प्रगति के शिखर पर थीं। उस समय सुख, शांति, समृद्धि आदि विपुल थी और समाज रचना भी श्रेष्ठ थी। भिन्न-भिन्न संस्कृति की प्रगति का आधार पवित्रता और एकता (Purity and Unity) था। पवित्रता के आधार पर आपसी व्यवहार और संबंध में एकता थी और इसी कारण आपसी युद्ध आदि न थे।

परंतु सभी संस्कृतियों का इतिहास यही शिक्षा देता है कि समृद्धि के शिखर पर पहुँचने के पश्चात उन्होंने इन नीति नियमों के बंधन को हल्का कर दिया। पवित्रता का त्याग किया। अपवित्र जीवन-व्यवहार के कारण एकता नष्ट हुई और आपसी मतभेद शुरू हुए। परिणाम स्वरूप सभी संस्कृतियों का पतन हुआ और कई संस्कृतियां तो इतनी नष्ट हो गईं जो वर्तमान में उनके पदचिह्न भी नहीं मिलते। पवित्रता है तो एकता है और उसी कारण समृद्धि और सामर्थ्य है यह पाठ इन ३२ भिन्न संस्कृतियों का इतिहास सिखाता है। लेकिन प्रश्न यह है कि वर्तमान में जो-जो समाज समृद्धि और भौतिक उन्नति के शिखर पर हैं क्या वे इस इतिहास की शिक्षा को सीखेंगे ?

व्यक्तियों का इतिहास भी यही शिक्षा देता है। हरक्यूलीस के पास अप्रतिम शौर्य और ताकत थी और यह ताकत उसके बालों के कारण थी। एक सुंदरी ने उसे फंसाया। शराब और सुंदरी के नशे में उसने अपनी ताकत गंवाई और उसका पतन हुआ। आज भी कई देशों में वहाँ के प्रधानों का अन्य स्त्री से दुर्व्यवहार के कारण लोगों के विरोध के कारण उन्हें अपने प्रधान पद का त्याग करना पड़ता है।

भारत के इतिहास पर दृष्टि क्षेप डालो। देहली पर पृथ्वीराज चौहान का राज्य था। उसने संयोगिता का हरण करके जयचंद जी से रिश्ता बिगाड़ा। आपस की एकता टूटी और विदेशी राजा से युद्ध में पृथ्वीराज हार गया। परिणाम क्या हुआ भारत में विदेशी राज्य शुरू हुआ। मुगल राज्य का अंतिम राजा शराब और सुन्दरी में लिप्त था जब कि अंग्रेजों ने उसे हरा दिया। सोमनाथ मंदिर का विध्वंसक मोहम्मद गजनबी के विजय का कारण था—गुजरात का राजा भीमदेव सोमनाथ मंदिर की नर्तकी चौला-देवी के साथ फंसा हुआ था।

क्या इतिहास का यह पाठ, वर्तमान समय में समृद्धि के शिखर पर बैठे हुए देश सीखेंगे ? क्या

वहां के नागरिक पवित्रता के बंधन को अपनायेंगे ? अमेरिका आदि समद्ध देश यह बात मानेंगे कि पवित्रता का कंगन ही उनकी समृद्धि का सबसे बड़े से बड़ा रक्षक है। आज यदि देखा जाए तो वहां पर काम वासना की तप्ति अनियंत्रित है। ब्रह्मचर्य, पवित्रता आदि बातें पुराने जमाने की हो गई हैं। सहजरीति से अर्थ-प्राप्ति के कारण तीव्र पुरुषार्थ करना लोग भूल गये हैं। विद्यालयों में भी अन्य देशों से आये हुए बच्चे अमेरिकन नागरिकों के बच्चों की अपेक्षा विशेष अध्ययन करते हैं और उच्चतम श्रेणी तथा पारितोषक प्राप्त करते हैं। सूक्ष्म रूप में आंशिक रंगभेद होते भी भारतीय नागरिक की औसत आमदनी अमेरिका के वहां के नागरिक की औसत आमदनी से करीब दुगुनी है। और धंधे में (Business) प्रति वर्ष अशोध्यऋण (Baddebt) २ प्रतिशत है तो शॉप-लिफ्टिंग (Shop-Lifting) के कारण होने वाला घाटा (Loss) १० प्रतिशत है। करीब २५ प्रतिशत युगल आपस में कानूनी तौर से लग्न किये बिना ऐसे ही रहते हैं। जितना समय चाहा उतना समय साथ में रहे और फिर एक सेंकड में आज़ाद होकर अलग-अलग हो जाते हैं, परिणाम स्वरूप उनके बच्चों का जीवन बिगड़ता है। ऐसे बच्चे जिन्होंने मात-पिता का सच्चा प्यार नहीं पाया है समाज में गुंडों की तरह जीवन व्यतीत करके औरों का जीवन भी बरबाद करते हैं। मतलब पवित्रता रूपी बंधन टूटने से अनेक प्रकार की समस्यायें सामने आती हैं।

फिर भी वहां के बुद्धिवान लोग इतिहास से यह शिक्षा लेने के लिए तैयार नहीं हैं कि भूतकाल में ३२ श्रेष्ठ संस्कृतियों का सर्व प्रकार की उन्नति के शिखर पर पहुँचने के पश्चात पवित्रता के नियमों का उलंघन करने के कारण पतन हुआ। पवित्रता के कारण सर्व प्रकार के वैभव थे। पवित्रता संपन्न चरित्र ही सर्वश्रेष्ठ चरित्र है। अर्थात शिव बाबा के महावाक्य "पवित्रता ही व्यक्तित्व है" (Purity is pers onalety) तथा 'पवित्रता ही राजस्व है' (Purty is royalty) ये पाठ वर्तमान में कैसे आज के समृद्ध धनाढ्य देशों को सिखाया जाय ?

अन्य सब प्रश्न पूछने के बाद अर्थात टी० वी० मुलाकात समाप्त होने के बाद प्रश्नकर्ता भ्राता ने मुझे कहा कि रमेश भाई आपने बहुत अच्छा संदेश आज सबको सुनाया। आशा है कि ये प्रश्नोत्तर हमारे बुद्धिवान, विचारवान लोग सुनेंगे और उसी के आधार पर कुछ विशेष प्रयत्न करेंगे। ○

(पृष्ठ १४ का शेष)

किसी की बातों में न आना

तीनों ने अलग-अलग यही कहा कि यह मेमना कितने में दोगे ? तो आखिर मैंने यही सोचा कि क्यों न इसे यहाँ ही बेच दूँ।

फिर पिता ने उसे समझाया कि बेटा, ये तीनों व्यक्ति अवश्य ही आपस में मिले हुए ठग थे। इन तीनों ने तुम्हें छोटा जान आपस में मिलकर यह योजना बनाई होगी और तीनों ने तुम्हें अलग-अलग यह कहकर ठग लिया कि यह तो मेमना है। कम-से-कम तुम यह तो सोचते कि मैंने तुम्हें क्या कहा था। चलो, कोई बात नहीं। आगे के लिए ध्यान रखना। नुकसान तो हो गया परन्तु ठोकर खाकर भी सम्भल जाओगे तो अच्छा है। सदा अपने पर, अपने शुभ चिन्तकों पर भरोसा रखो फिर तुम किसी की झूठी बातों के बहकावे में धोखा नहीं खाओगे। और जिन्दगी में सफल हो जाओगे।

तो देखा बच्चो, तुम भी कभी किसी के धोखे में मत आना। सदा परमात्मा को याद करते रहोगे तो तुम्हारी निर्णय शक्ति बढ़ती जाएगी और सत्य असत्य की पहचान कर सकोगे। अच्छा ओम-शान्ति— □

शाहदरा सेवा केन्द्र के भ्राता कृष्णलाल जी सूचना प्रसारण मंत्री भ्राता एच० के० एल० भगत जी को ल० ना० का चित्र भेंट करते हुए।

भटिण्डा में ब्र०कु० सुदेश ए०के० मिश्रा, डिप्टी कमिश्नर जी को चित्रों की व्याख्या दे रही हैं।

कानपुर में प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात अपने विचार प्रकट करते हुए डी० आई० जी० भ्राता बलबीर सिंह जी

गोवा सेवा केन्द्र की तरफ से सावर्डे गांव में प्रदर्शनी के उद्घाटन के पश्चात् अपने विचार प्रकट करते हुए डॉ० संजागिरि जी।

कानपुर सिविल लाइन द्वारा आयोजित विधि वेत्ता सम्मेलन में अध्यात्म तथा न्याय पर प्रवचन करते हुए भ्रा० पन्ना लाल गुप्ता, ऐडवोकेट कानपुर। ब्र० कु० बृजमोहन जी साथ में बैठे हैं।

फतेहगढ़ सेवा केन्द्र द्वारा युवा विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। एक प्रत्याशी बच्ची अपने विचार व्यक्त कर रही है, भ्राता सी०वी० श्री वास्तवा जी, प्राचार्य डी० एन० डिग्री कालेज बैठे हैं।

चिकमंगलूर में आध्यात्मिक संग्रहालय के उद्घाटन समारोह पर मंच पर सेशनजज, व ब्र० कु० हृदय-पुष्पा जी बैठी हैं।

कोल्हापुर सेवा केन्द्र में कोल्हापुर के कलेक्टर भ्राता दिनकरराव पाटिल जी को ब्र०कु० सुनंदा ल० ना० का चित्र भेंट करती हुई।

शिवसागर में चैतन्य झाँकी व प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता बी० एन० वोरा, इन्जिनियर ने शिव बाबा का झंडा फहराकर किया।

कालेज स्क्वायर कटक संग्रहालन द्वारा आयोजित प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह में प्रवचन करते हुए प्रिन्सिपल डा० गंगाधर शाह।

जीवन की गुह्य पहेली

एक छोटी-सी भूल के कारण मनुष्य माया अर्थात काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आदि विकारों के पंजे में फँसकर दुःखी और अशान्त हो रहे हैं। यह जीवन-सम्बन्धी पहेली बड़ी ही गुह्य है, परन्तु जो मनुष्य इसके राज़ को अच्छी रीति समझ जाते हैं उनके लिए बहुत ही सहज है। बस एक ही सेकेण्ड में ज्ञान का सार धारण करके २१ जन्मों (२५०० वर्षों) के लिए जीवन्मुक्ति पद पा सकते हैं। परन्तु यह सर्वोत्तम प्राप्ति उस ही भाग्यशाली को होती है जो प्रेक्टीकल (क्रियात्मक) रीति सदा पारलौकिक परमपिता परमात्मा शिव के साथ सच्चे होकर यह युक्ति आचरण में लाते हैं।

देखिये, यह जितने भी विकार हैं इन सब का मूल कारण यह है कि मनुष्यात्मा स्वयं को ईश्वर की सन्तान निश्चय न करके अपने को देह-धारी समझ, देह और देह के सम्बन्धों में फँसी हुई है और दूसरों के साथ कर्मों में बर्तते समय भी वह उनको एक सर्वशक्तिमान, ज्ञान के सागर, शान्तिस्वरूप और आनन्द स्वरूप परमपिता परमात्मा की सन्तान निश्चय नहीं करती बल्कि देह समझती है।

केवल इस एक सहज युक्ति को समझ कर कि—"मैं इस शरीर से न्यारी आत्मा सर्वशक्तिमान्, ज्ञान सागर, शान्ति और आनन्द के सागर, ब्रह्मा, विष्णु और शंकर के भी रचयिता, पारलौकिक परमपिता परमात्मा त्रिमूर्त्ति शिव की सन्तान हूँ, मेरा स्वधर्म पवित्रता और शान्ति है, मैं आत्मा शान्त देश (परमधाम) की रहने वाली हूँ और इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर यह शरीर रूपी वस्त्र पहन कर अपना पार्ट बजाने आई हूँ, अर्थात इस बेहद के ड्रामे में एक पार्टधारी हूँ," आत्मा पुनः पवित्र और सुख-शान्ति सम्पन्न हो सकती है।

दुःख और अशान्ति को मिटाने और सुख व शान्ति पाने के लिए इस एक निश्चय अथवा योग के बल के सिवा दूसरा कोई उपाय नहीं। **जीवन में सुख और शान्ति को प्राप्त करने के लिए ज्ञान के इस सार को धारण करने की बजाय जो मनुष्य यज्ञ, तप, जप, पूजा-पाठ, तीर्थ, व्रत इत्यादि अनेक प्रकार के उपाय करते रहते हैं, उन्हें यह पवित्रता रूपी अनमोल वस्तु कभी नहीं मिल सकती क्योंकि पवित्रता और शान्ति परमपिता परमात्मा 'शिव' की ही सम्पत्ति है जो कि प्रैक्टीकल में स्वयं को ईश्वरीय सन्तान निश्चय करने से ही प्राप्त हो सकती है।**

तू किस मंज़िल का राही है ?

इक पार्ट बजाने आया था, जो पूरा होने वाला है
तय्यार हो वापस चलने को, मद-माया में हो चूर नहीं
कलियुग की रात्रि बीत चली, सतयुग दिन चढ़ने वाला है
तू गहरी नींद में सोया है, और देखता सुन्दर नूर नहीं
तू जाग ज़रा और करवट ले, शिव बाबा स्वयं ही आया है
क्यों ज्ञान योग के हीरों से, करता झोली भरपूर नहीं ?
ओ भूले मुसाफ़िर भूल गया, तू किस मंज़िल का राही है
तू ज्ञान योग में तेज़ चले तो मंज़िल कोई दूर नहीं।

आध्यात्मिक सेवा समाचार (पृष्ठ ३२ का शेष)

अमरेली—सेवाकेन्द्र के वार्षिकोत्सव पर परमात्मा परिचय सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन म्युनिसिपल गर्ल्स हाई स्कूल के प्रिन्सिपल उमेश भाई जोशी ने किया। इस अवसर पर चैतन्य झाँकी के साथ शोभा यात्रा निकाली गयी। ध्वजारोहण के वक्त जिला कलेक्टर भ्राता राव साहब पधारे थे।

कानपुर किदवाई नगर—घाटमपुर में दशहरा के अवसर पर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन उत्तर प्रदेश सरकार के नियोजन मंत्री भ्राता नरेन्द्रसिंह जी ने किया। आप प्रदर्शनी देखकर बहुत प्रभावित हुए। आपने दो सौ ग्राम प्रधान घाटमपुर के स्नेह मिलन के अवसर पर ईश्वरीय सेवाओं से प्रभावित हुए, अपने विचार उनके समक्ष रखे।

बरेली—समाचार मिला है कि रामपुर, काशीपुर बहेडी इत्यादि सेवाकेन्द्रों द्वारा दशहरा के अवसर पर रामलीला मैदान में विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इन प्रदर्शनियों द्वारा बहुत अच्छी सेवा की गयी। अनेक पुलिस आफिसरों, शहर के मुख्य व्यक्तियों, व मुख्य आफिसरों की सेवा की गई।

गोंदिया—समाचार मिला है कि गोंदिया नगरी के इतिहास में प्रथमबार चैतन्य दुर्गा की झाँकी का भव्य आयोजन किया गया। दुर्गा समिति गोंदिया के अध्यक्ष भ्राता श्री राम अग्रवाल के निमंत्रण पर यह झाँकी बनाई गयी। शक्ति के उपासकों ने चैतन्य शक्तियों के दर्शन किए।

अलवर—जिला जेल में ब्र० कु० बहनों का प्रवचन हुआ। इस प्रवचन से भ्राता योगेन्द्रसिंह जी यादव सुपरिन्टेन्डेन्ट जेल, भ्राता शर्मा जी जेलर व जेल कर्मचारी व कैदियों ने लाभ उठाया।

राजकोट—नवरात्री के उपलक्ष में रामनाथ तक्षशिला सोसायटी, राजनगर सोसायटी में चार देवियों की चैतन्य झाँकी का प्रोग्राम तथा नवरात्री के रहस्य को स्पष्ट किया गया। इसके अलावा मृत्यु के प्रसंग पर चार स्थानों पर प्रवचन हुए।

मणिनगर-अहमदाबाद—धोडासर गाँव में उपसेवा केन्द्र की स्थापना गाँवों में जन-जन तक परमात्मा का सन्देश देने अर्थ की गयी। इस सेवाकेन्द्र द्वारा धोडासर, वटवा हसनपुर शाहवाड़ी गाँवों में अच्छी ईश्वरीय सेवा की गयी।

दिल्ली शाहदरा—समाचार मिला है कि २ अक्टूबर को सेवाकेन्द्र के समीप श्रीमति कमला नेहरू पार्क के उद्घाटन समारोह में पधारे भारत के सूचना प्रसारण मंत्री भ्राता एच० के० भगत जी को एक लक्ष्मी नारायण का चित्र स्वागत में भेंट किया गया।

दिल्ली कृष्णानगर—दशहरा के अवसर पर रामलीला मैदान के निकट एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गयी। मुख्य चित्र व बड़ा बैनरा "रावण अभी मरा नहीं" लगाया गया। इसलिए यह प्रदर्शनी जनता के आकर्षण का केन्द्र बनी रही। इसका उद्घाटन भ्राता कटारिया जी, नगर निगम पार्षद तथा समाप्ति भ्राता सुखनलाल जी सदस्य महानगर परिषद ने किया। इस प्रदर्शनी द्वारा तीन दिन तक हजारों आत्माओं को प्रभु सन्देश दिया गया।

बरनाला—समाचार मिला है कि दो दिन की चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे अनेक आत्माओं ने परमात्म सन्देश प्राप्त किया।

फतेहगढ़—सेवाकेन्द्र की ओर से युवा गोष्ठी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यहाँ के मुख्य दण्डाधिकारी भ्राता श्री सी० बी० श्री वास्तवा जी ने मुख्य अतिथि पद स्वीकार किया। डी० एन० डिग्री कालेज के प्राचार्य डा० भ्राता हुकुमसिंह जी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। १०वीं से १२ वीं कक्षा तक के बच्चों के बीच यह प्रतियोगिता रखी गयी जिसका विषय था "भविष्य में आप अपना समाज कैसा बनाना चाहते हैं।" ६ विद्यालयों के १४ बालक, बालिकाओं ने भाग लिया।

इसके अतिरिक्त अहमदनगर, विराट नगर, चिकमंगलूर, बसवन बागेवाडी, कोल्हापुर, दार्जिलिंग, भादरा, झुन्झुनू, वारंगल, गांधी नगर, भंडारा, चिरकुन्डा, सिन्दरी फतेहगढ़, लहार इत्यादि सेवाकेन्द्रों से दशहरे के अवसर पर चैतन्य देवियों की झाँकी व आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उत्साह वर्धक समाचार मिले हैं।

□

गंगापुर सीटी की तरफ से वजीरपुर में प्रदर्शनी के उद्घाटन के पश्चात् ब्र०कु० सुमित्रा जी मंडी के अध्यक्ष को ईश्वरीय सन्देश देते हुए।

घोडासर उपसेवा केन्द्र द्वारा हसनपुर ग्राम पंचायत में प्रदर्शनी के उद्घाटन के पश्चात् सरपंच जी को ब्र० कु० ज्योतस्ना परमात्मा का परिचय देते हुए।

पोरबन्दर में चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए भ्राता गुरुदयाल जी, डी० एम० व ब्र० कु० गीता बहन दिखाई दे रही हैं।

राँची में प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् प्राचार्य भ्राता शैलेन्द्र किशोरशरण जी अपना मन्तव्य लिख रहे हैं। साथ में ब्र० कु० बहन-भाई बैठे हैं।

नीमच सेवा केन्द्र की ओर से जावद में उप-सेवाकेन्द्र की स्थासना की गई। उद्घाटन करते हुए भँवर लाल चोपड़ा, भ्राता राधा वल्लभ ओझा व ब्र० कु० पुष्पा।

कोरबा में प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता के० पी० तिवारी दण्डाधिकारी बिलासपुर एवं भ्राता एम० आर० उपाध्याय तहसीलदार कोरबा व ब्र० कु० ममता जी द्वारा सम्पन्न हुआ।

रायपुर सेवा केन्द्र द्वारा नेवरा में प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् नगरपालिका अध्यक्ष को ब्र० कु० कमला चित्रों की व्याख्या दे रही हैं।

यवतमाल सेवा केन्द्र पर (भा० स० का०) के अध्यक्ष भ्राता शरद चन्द्र पवार शिव सन्देश सुनने के पश्चात् लौटते हुए।

बंगलौर में ब्र० कु० हृदय पुष्पा जी गरीब छात्राओं को सफ़ेद ड्रेस उपहार रूप में दे रही हैं।

सीकर में राजयोग प्रदर्शनी के अवसर पर ब्र० कु० पुष्पा बहन मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी को चित्रों की व्याख्या दे रही हैं।

संसार की हालत और परमात्मा का सन्देश

ब्र० कु० शकुन्तला कानोडिया

पात्र

इन्दु व शशि (कालेज की लड़कियाँ)
ब्रह्माकुमारी बहन
समय : प्रातःकाल

पहला दिन—

(इन्दु मन्दिर जा रही है। रास्ते में उसकी सखी शशि मिलती है)

शशि—गुड मार्निंग इन्दु।

इन्दु—गुड मार्निंग।

शशि—कहाँ जा रही हो ?

इन्दु—मन्दिर जा रही थी।

शशि—तुम कुछ उदास लग रही हो ?

इन्दु—नहीं तो !

शशि—नहीं, आज तुम्हारा चेहरा उतरा हुआ है ?

इन्दु—चलो शशि, उधर उस पार्क में चलकर बैठते हैं। आज मेरा मन कहीं नहीं लग रहा है।

(दोनों पार्क में बैठ जाती हैं)

शशि—अब बताओ, आज क्या हुआ है ? इतनी उदास क्यों हो ?

इन्दु—शशि, तुम मेरी दीदी को जानती हो ना जिसकी शादी अभी पिछले साल हुई थी ?

शशि—हाँ, हाँ, वो निर्मल, क्या हुआ उसको ?

इन्दु—वह अभी कल ही ससुराल से आई है। ससुराल वालों ने उसे घर से निकाल दिया है।

शशि—क्यों ?

इन्दु—उन लोगों की मांग थी कि हमें दहेज में वीडियो चाहिए। जब यह मांग उनकी पूरी नहीं हुई तो उन लोगों ने दीदी को ही मारपीट कर घर से निकाल दिया और बोले कि अपने बाप से कह देना अगर हमारी मांग पूरी कर देंगे तो हम तुझे रखेंगे वरना अपने पीहर ही रहना और हम अपने बेटे की दूसरी शादी कर देंगे।

शशि—दुनिया की नीयत देखो कितनी बुरी है !!

इन्दु—शशि, दीदी निर्मल सारा दिन उदास रहती है, मैंने कभी-कभी उसको छुप-छुप कर रोते हुए भी देखा है। न ठीक से खाना खाती है, बस सारा दिन खोई-खोई-सी रहती है। माँ व पिताजी भी उसकी वजह से बहुत चिन्तित रहते हैं। मेरा भी न पढ़ाई में मन लगता है और न घर में। इसीलिए मैं मन्दिर में जा रही थी ताकि मन को थोड़ी बहुत शान्ति मिले ! हमारे शान्त व सुखी परिवार पर दुःख के बादल छा गये ! दीदी की उदासी मुझसे देखी नहीं जाती।

शशि—इन्दु, तुम्हारी दीदी तुमसे दो साल ही तो बड़ी है। अभी तो बचपना भी नहीं गया और यह दुःख का पहाड़ टूट पड़ा। और उसकी सारी जिंदगी उसकी आँखों के सामने पड़ी है।

इन्दु—शशि, तुमने देखा होगा, मेरी दीदी कितनी सरल स्वभाव की व सीधी-सादी थी ? कॉलेज में हमेशा फर्स्ट आया करती। उसकी और भी आगे पढ़ने की इच्छा थी। परन्तु पिताजी नहीं माने और जबरदस्ती शादी कर दी।

शशि—और शादी का यह परिणाम निकला !

इन्दु—सच सखी ! आज की दुनिया में शादी बरबादी ही तो है। शादी तो एक कसाई का खूंटा है। कन्या को सात फेरे देकर उस खूंटे से बाँध देते हैं और जीवन भर के लिए फन्दा गले में डाल देते हैं।

शशि—वह जो अपने साथ पढ़ती थी ना डाक्टर की लड़की उषा, वह विधवा हो गई है। सुना है दोनों में बनती नहीं थी। एक शाम को दोनों में

खूब झगड़ा हुआ और पति महोदय ने रेल के नीचे कटकर आत्महत्या कर ली।

इन्दु—वह मोटी-सी वही उषा ? अरे उसकी शादी को तो डेढ़ ही साल हुआ है।

शशि—हाँ वही। उसके एक लड़की है सात महीने की।

इन्दु—वह मुझे कहा करती—"इन्दु देख लेना, जब मेरी शादी होगी ना तो मैं एक छोटा-सा शान्त व सुखी घर बसाऊँगी।"

शशि—इन्दु, न जाने क्यों मुझे बचपन से ही शादी के नाम से नफरत है।

इन्दु—और मैंने तो अपने पिताजी से कह दिया है कि मैं शादी बिल्कुल नहीं करवाऊँगी।

शशि—अब देखो इन्दु, जीवन कितना प्यारा है ! स्वतन्त्र होकर खेलते हैं, पढ़ते हैं, बातें करते हैं, मौज मारते हैं। शादी के बाद तो एक पिंजरा मिलता है रहने के लिए। बस पिंजरे की मैना बन कर रह जाओ।

इन्दु—देखो शशि, हम दोनों शुरू से ही साथ खेले हैं, साथ पढ़े हैं, एक दूसरे के दु:ख-सुख में साथ रहे हैं और आगे भी हम साथ ही रहेंगे। तो आज ही इसी पार्क में हम दोनों यह प्रतिज्ञा करते हैं कि चाहे हमें कितने भी विघ्न क्यों न सहन करने पड़ हम शादी करवा कर बरबादी नहीं करवाएँगी और पढ़-लिखकर पवित्र रहकर अपने देश की सच्ची सेवा करेंगी !

शशि—मेरी भी यही प्रतिज्ञा है। तो रखो हाथ पर हाथ !

इन्दु—देखो शशि, पूरे बारह बज चुके। धूप कितनी तेज हो गई है। हम बातों में इतने खो गये कि घर की याद ही नहीं रही। माताजी इन्तजार कर रही होंगी चलो घर चलें। कल फिर मिलेंगे। अच्छा गुड बॉय !

शशि—गुड बॉय !

दूसरा दिन—

(शशि अपने घर के आँगन में कुर्सी पर बैठी है। इन्दु हाथ में अखबार लिए घर में प्रवेश करती है)

इन्दु—हैलो शशि, क्या कर रही हो ?

शशि—कुछ नहीं, आओ इन्दु।

इन्दु—तूने आज का अखबार पढ़ा है ?

शशि—नहीं तो। क्या समाचार है ? कोई नई खबर है क्या ?

इन्दु—नई नहीं, बहुत बुरी-बुरी खबरें हैं !

शशि—क्या ?

इन्दु—सुनो, देहरादून से दिल्ली जाने वाली एक्स-प्रेस गाड़ी पूरी की पूरी उलट गई। सैकड़ों लोग मारे गये। और घायलों की हालत तो बड़ी दर्द-नाक है। वहाँ पर बड़ा ही भयानक दश्य मचा हुआ है।

शशि—सच ?

इन्दु—और उत्तरप्रदेश के लगभग तीस गाँव बाढ़ की चपेट में आ गये हैं। घरों की छतें पानी में डूबी हुई हैं। जान माल की बहुत ही ज्यादा हानि हुई है। चारों ओर त्राहि-त्राहि मची हुई है।

शशि—ये तो बहुत बुरी·····

इन्दु—इराक इरान में घमासान युद्ध फिर छिड़ गया है।

शशि—ये सब क्या हो रहा है इस धरती पर ?

इन्दु—विनाश ! महाविनाश !!

शशि—हर दिन कोई न कोई बुरी खबर ही सुनने को मिलती है। न जाने इस संसार की क्या हालत होने वाली है ?

इन्दु—चारों तरफ मौत ही मौत दिखाई पड़ रही है। सारा संसार ही श्मशानघाट बना हुआ है।

शशि—मेरा तो जी घबरा रहा है।

इन्दु—यह हालत सुनकर मुझे रेडियो के एक गीत की दो लाईन याद आ गईं। सुनाऊँ ?

शशि—सुनाओ।

इन्दु—देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई भगवान
कितना बदल गया इंसान
सूरज ना बदला चाँद ना बदला ना बदला रे आसमान
कितना बदल गया इंसान···

शशि—यह गाना बिल्कुल ठीक बनाया है किसी

बनाने वाले ने।

इन्दु—क्या भगवान् ने ऐसी ही सष्टि रची होगी ?

शशि—नहीं इन्दु, भगवान् भला ऐसी गलती क्यों करेंगे ? वे तो सबके सुख कर्त्ता और दुःख हर्त्ता हैं, कल्याणकारी हैं। भगवान् ने तो जब दुनिया बनाई होगी तो सम्पूर्ण सुख-शान्ति व पवित्रता से भरपूर स्वर्ग ही बनाया होगा। पर इसको ऐसा गन्दा और विकारी तो इन्सान ने अपने हाथों ही किया है।

इन्दु—शशि, तुमने गीता पढ़ी होगी। गीता में भगवान् ने कहा है कि जब-जब धर्म की अति ग्लानि होती है धरती पापों के बोझ से दब जाती है तब मैं सभी का कल्याण करने के लिए धर्म की पुर्नस्थापना करने के लिए धरती पर आता हूँ। तो भगवान् को अब आना चाहिए ना ?

शशि—क्या पता भगवान् अब किसी रूप में धरती पर आ ही चुके होंगे तो ? गीता में यह भी तो लिखा है कि मैं साधारण तन में आता हूँ और मूढ़-मति लोग साधारण तन में आए हुए परमात्मा को पहचान नहीं पाते हैं।

इन्दु—मेरी दादी कहा करती है—गाय का विष्ठा खाना, आटा पुड़ियों में बिकना, कन्या द्वारा खुद पति की मांग करना, दूध बोतलों में बिकना, केशों का शृंगार होना, माँ-बाप की इज्जत न होना, आकाश से अग्नि बरसना—ये सब कलियुग की निशानियाँ हैं।

शशि—यह सब तो आज की दुनिया में हो रहा है।

इन्दु—फिर तो कहीं न कहीं भगवान् जरूर आए होंगे। भगवान् की वाणी झूठी थोड़े ही हो सकती है।

शशि—क्या पता चलता है ?

इन्दु—शशि, अपने कालेज के रास्ते में एक आश्रम पड़ता है। तू कभी वहाँ गई है ?

शशि—नहीं, मैं तो कभी नहीं गई पर मेरी मम्मी वहाँ पर एक आध बार जरूर गई है।

इन्दु—वहाँ पर कुछ सफ़ेद वस्त्रधारी भाई व बहन रहते हैं। सुना है वहाँ जाने वालों को सुख व शान्ति की सहज ही प्राप्ति हो जाती है।

शशि—हम भी चलकर देख कि वहाँ ऐसा क्या जादू मन्त्र लगाया जाता है ?

इन्दु—हाँ, मेरा भी कई बार मन हुआ कि अन्दर जाकर देखूँ यहाँ क्या होता है। न कभी यहाँ भजन ही सुनाई देते हैं और न आरती ही। लेकिन जब वे अपना कार्य समाप्त करके बाहर आते हैं तो मुझे उनके चेहरों पर एक-एक अजीब-सी अलौकिक आभा नजर आती है। ऐसा लगता है जैसे उन्हें कोई बहुत बड़ी प्राप्ति होने की आन्तरिक खुशी है।

शशि—अच्छा, कल का प्रोग्राम बनाएंगे। कल कॉलेज की छुट्टी भी जल्दी ही होगी और हम दोनों आश्रम पर चलेंगी। अच्छा गुट बॉय।

इन्दु—गुड बॉय !

तीसरा दिन—प्रजापिता ब्रह्माकुमारी आश्रम

प्रातःकाल

(सफेद वस्त्रधारी एक ब्रह्माकुमारी एक सफेद आसन पर ध्यान-मग्न बैठी है)

इन्दु—नमस्कार, बहिनजी !

ब्रह्माकुमारी—नमस्कार।

इन्दु—बहन जी, हम आपके आश्रम पर आपके ज्ञान के विषय में कुछ जानने के लिए आए हैं। क्या इस विषय में आप हमें कुछ बताने का कष्ट करेंगी ?

ब्रह्माकुमारी—हाँ हाँ क्यों नहीं ? हमारा तो धर्म ही सेवा है। बैठो !

जो ज्ञान हमारे यहाँ दिया जाता है और जो अब मैं आपको सुना रही हूँ वह स्वयं ज्योति बिन्दु स्वरूप परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के साकार तन में प्रवेश होकर हम बच्चों को सुनाया है। स्वयं परमात्मा ने धरती पर आकर तीनों लोकों और तीनों कालों का रहस्य समझाया है। हम कौन हैं, कहाँ से आए हैं और हमारा परमपिता कौन है इन सबका भेद खोला है। परमात्मा के ज्ञान को सम्पूर्ण रूप से धारण करने के बाद ही

सच्ची मन की शान्ति, सुख व पवित्रता की प्राप्ति होती है और आने वाले सतयुग में हमें देव पद मिलता है। आप आत्मा हैं। शरीर आत्मा की गाड़ी है। आत्मा इसकी ड्राईवर है। यह आत्मा इस देश की रहने वाली नहीं है। यह परम धाम, शान्ति धाम से इस सष्टि पर आती है। शरीर रूपी गाड़ी लेकर सृष्टि रूपी रंगमंच पर सुख-दुःख का पार्ट बजाती है। शरीर के बाप को तो हम सब जानते ही हैं। परन्तु शरीर को चलाने वाली आत्मा का पिता परमात्मा शिव है। वह अभी कलियुग के अन्त में आकर हम आत्माओं को फिर से सुख-शान्ति प्रदान कर रहे हैं। परमात्मा शिव का सन्देश है पवित्र बनो, राजयोगी बनो। आप जैसी हजारों कन्याएँ इस पवित्र मार्ग पन चल कर अपना व दूसरों का जीवन सुख शान्ति से भरपूर कर रही हैं। चाहो तो आपको भी उसकी गोद मिल सकती है।

शशि—क्या हमें परमात्मा मिल सकता है ?

ब्रह्माकुमारी—क्यों नहीं ? आप भी तो उस परमात्मा की सन्तान हैं वह जैसे हमारा पिता है वैसे आपका भी तो पिता है ना ?

इन्दु—बहन जी हमें क्या करना होगा ?

ब्रह्माकुमारी—देखो, इसमें कर्म कोई नहीं छोड़ना है। चलते-फिरते, कर्म करते हुए अपने को एक अजर, अमर, अविनाशी बिन्दुआत्मा समझकर परमात्मा की मधुर स्मृति में रहना है। पढ़ाई पढ़ते हुए भी आप अपना व दूसरों का जीवन सुख-शान्तिमय बना सकती हैं। आपको अपने अन्दर की सिर्फ बुराइयाँ छोड़नी हैं और प्याज, लहसुन, मांस, अण्डे जैसी तामसिक चीजें भोजन में प्रयोग नहीं करनी हैं।

शशि—बहन जी, हम आज से हर रोज आया करेंगे।

ब्रह्माकुमारी—हाँ, कालेज की छुट्टी होते ही एक घण्टे की ईश्वरीय ज्ञान की क्लास यहाँ किया करो। दोनों पढ़ाई साथ-साथ पढ़ो। फिर देखना आपको जावन में कितना स्वर्गिक आनन्द मिलता है।

इस संसार की हालत को देखते हुए कल्याणकारी पिता शिव का यही सन्देश है कि बच्चो, ५००० साल के बाद मैं फिर से तुम्हें सुख व शान्ति का वर्सा देने आया हूँ। यदि अब नहीं तो कभी नहीं ले सकेंगे। अच्छा ओमशान्ति !

दोनों सखियां—ओमशान्ति !

दोनों सखियां—चलते हुए—

इन्दु—देखो शशि, यहाँ कितनी शान्ति है। और बहनजी को देखा ? ऐसी लग रही थी जैसे शान्ति के सागर में समाई हो !

शशि—सच इन्दु, यहाँ आकर तो मैं अपने को व इस दुनिया को भूल ही गई।

इन्दु—अच्छा, आज से हम दोनों का नया जन्म हो गया। कल से हम अपना नया जीवन आरम्भ करेंगी। अच्छा ओमशान्ति

शशि—ओमशान्ति !

□

(पृष्ठ ८ का शेष)

सृष्टि रूपी कलश में मुँह भी घुसेड़ दिया और नाक भी और गरदन भी। उसकी आसक्ति और पदार्थ-मोह का परिणाम यह हुआ कि आज चाहने पर भी उसका इस सृष्टि रूपी कलश से निकलना मुश्किल है। जो मनुष्य अपने पुरुषार्थ से इससे नहीं निकल सकता, उसे निकालने के लिए कलश फोड़कर निकलने के सिवा और कोई चारा नहीं है।

अतः आज जबकि अनेकानेक मनुष्य ईश्वरीय ज्ञान और योग द्वारा स्वयं को देह से न्यारा करके इस सृष्टि रूपी कलश से निकाल नहीं सकते तब उनको मुक्त करने के लिए परमपिता परमात्मा इस सृष्टि के महाविनाश की तैयारी करा रहे हैं। महाविनाश होने पर लोभ-वश झूठा कर्म करने वालों को दण्ड भोगना पड़ेगा अर्थात उनकी गत बनेगी, पीछे उनकी गति होगी।

—०—

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ब्र० कु० लक्ष्मण, सत्यनारायण, कृष्णा नगर, देहली द्वारा संकलित

अशान्ति को आध्यात्मिक शक्ति द्वारा ही समाप्त किया जा सकता है

दादी प्रकाशमणी जी संयुक्त राष्ट्र संघ में

न्युयार्क—प्राप्त समाचार के अनुसार ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणी जी ने संयुक्त राष्ट्र संघ की गैर सरकारी संस्था के वार्षिक उत्सव पर आयोजित सम्मेलन में भाग लिया तथा उपस्थित सभी धर्मों की प्रतिष्ठित आत्माओं को शान्ति का सन्देश दिया और योग अभ्यास के द्वारा शान्ति की अनुभूति कराई। गैर सरकारी संस्था की प्रधान बहन सेली स्विग शैली दादी जी से दो बार मिली तथा दादी जी का स्नेह स्वागत किया। संयुक्त राष्ट्र संघ के सेक्रेट्री जनरल भ्राता डा० जेवीयर पेरेज डी० क्यूलार सभा में ही दादी जी से मिले तथा बहुत समय तक ज्ञान की वार्तालाप करते रहे। दादी जी ने उन्हें योग अभ्यास द्वारा शान्ति की अनुभूति कराई तथा अपने सन्देश में कहा कि "विश्व की अनेक आत्माओं की शुभ कामनाओं सहित शान्ति और प्रेम का सन्देश लेकर हम आपके पास आये हैं। वर्तमान समय विश्व में भूख और भय के कारण मानसिक अशान्ति का वातावरण बन चुका है। चारों ओर से शारीरिक तथा मानसिक अशान्ति की आवाज़ सुनाई दे रही है। इसका कारण है आध्यात्मिक शक्ति को यथार्थ रीति प्रयोग में नहीं लाया जा रहा है। यह मानसिक युद्ध है, इस युद्ध में आन्तरिक शान्ति, सत्यता एवं ज्ञान के द्वारा विजयी बन सकते हैं। यह कार्य अब स्वयं शान्ति के सागर पिता परमात्मा द्वारा चल रहा है। उनके साथ सम्बन्ध जोड़ने से ही शान्ति होगी।" सन्देश सुनने के पश्चात सेक्रेटी जनरल ने दादी जी को पीस मैडल सौगात के रूप में भेंट किया। यू० एन० में उपस्थित सभी धर्मों के लगभग ६० प्रमुख व्यक्तियों का दादी जी से व्यक्तिगत मिलना विश्व पिता द्वारा विश्व में शान्ति का साम्राज्य स्थापित होगा।

गैर सरकारी संस्था की प्रधान सेली स्विग शैली जो १९८१ में दिल्ली महासम्मेलन में सम्मलित हुई थीं उन्होंने अपना अनुभव सुनाते हुए कहा कि मैंने माउण्ट आबू में दादी जी को इतना विशाल कार्यों में बिजी रहते भी सदा मुस्कराते हुए देखा है, दादी जी इतना महान प्रशासन का कार्य सम्भाल रही हैं फिर भी इनके चेहरे पर कभी थकावट या गुस्सा मैंने नहीं देखा। ये गुण हमने दादी जी से सीखा है तथा मैं भी इसका पूरा अटेन्शन रखती हूँ। यू० एन० की मीटिंग के पूर्व चर्चे में चल रहे प्रार्थना कक्ष में भी दादी जी ने ईश्वरीय सन्देश दिया। यू० एन० के असिस्टेंट सेक्रेट्री जनरल जेम्स जोन्हा से उनके ३६वीं मंजिल पर स्थित आफिस में दादी जी से मुलाकात हुई वे बहुत स्नेह से मधुबन तथा विद्यालय के कार्यों की पूछताछ करते रहे। दादी जी की उनके साथ एक घण्टे तक ज्ञान वार्तालाप चली। इसके पश्चात दादी जी यू० एन० के तीसरे असिस्टेंट सेक्रेटी जनरल मिस्टर अकाशी से मिलीं, जो जापानी हैं। उन्होंने दादी जी से मिलते ही ईश्वरीय विश्व विद्यालय को आभार दिया और कहा कि आपकी संस्था ने यू० एन० में हमें बहुत ही सहयोग दिया है, ऐसे सदा ही सहयोग देते रहना। दादी जी ने उन्हें आबू में, ८५ में होने वाली कानफ्रैन्स का निमन्त्रण दिया तथा यू० एन० का अर्थ यू अर्थात् युनिटी और एन० अर्थात् नेशन, बताते हुए कहा कि सब नेशन्स को मिलकर युनिवर्स में शान्ति स्थापन करनी है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के विशाल भवन के बगीचे में आयोजित एक समारोह में दादी जी ने जनसमूह को शान्ति का सन्देश दिया। इस स्थान पर अमेरिका के भूतपूर्व प्रेजीडेन्ट हुआ। दादी जी ने सभी को खुशखबरी सुनाई और विद्यालय द्वारा चल रहे विश्व शान्ति के महान कार्यों से अगवत कराते हुए कहा कि अब वह समय समीप आ गया है जब

मिस्टर रूजवेल्ट का यादगार है, उन्होंने भी शान्ति के अनेक प्रयास किये हैं। यू० एन० प्लाजा में माताओं के लिए एक स्नेह मिलन का आयोजन किया गया था। दादी जी ने माताओं को सम्बोधित करते हुए उन्हें अपने स्वमान की स्मृति दिलाई और कहा कि माता शक्ति है, १०० आचार्यों से उत्तम आचार्य माता है। माता ही बच्चे को पहले सिखाती है। माता में समाने की, सहन करने की शक्ति है। माता में रहम और स्नेह की भावना होती है। अब माताओं को अपने स्वमान में आकर परमात्मा पिता के कार्य में सहयोगी बनना चाहिए। परमात्मा ने माताओं के सिर पर ज्ञान का कलश दिया है। अत: आप सब मातायें हमारे साथ हाथ में हाथ देकर दृढ़ संकल्प करो कि हमें सारे विश्व को दुख अशान्ति के बन्धन से मुक्त कर सुख शान्ति देनी है। दादी जी का प्रवचन सुनकर माताओं ने अपने में विशेष शक्ति का अनुभव किया। दूसरा एक कार्यक्रम नगर के प्रतिष्ठित व्यापारियों के लिए रखा गया था जिसमें ६०-७० प्रसिद्ध व्यापारियों ने भाग लिया। जयन्ती बहन ने संस्था का परिचय दिया। दादी जी ने अपने प्रवचन में उनके पूछे गये कुछ प्रश्नों का उत्तर दिया। मोहनी बहन ने योग अभ्यास कराया। न्यूयार्क के समीप ही सागर के बीच एक टापू पर "स्टेच्यु आफ लिबर्टी" को देखने गये। वहाँ पर उपस्थित जनता को दादी जी ने सन्देश देते हुए कहा कि मदर लिबर्टी ने मनुष्य को स्वतन्त्र करने के लिए ज्योति जलाई है। अब तो शान्ति के सागर परमात्मा पिता ने विश्व से अज्ञान अंधकार मिटाने के लिए तथा सारे विश्व में ज्ञान का प्रकाश फैलाने के लिए माताओं को निमित्त बनाया है। इसके पश्चात भारतीय विद्या भवन में भारतवासियों के लिए एक सार्वजनिक कार्यक्रम था। सर्वप्रथम भारतवासियों ने दादी जी का विशेष स्वागत किया। दादी जी ने सभी को आत्मा परमात्मा का परिचय दिया। भारतीय विद्या भवन के चेयरमैन ने विद्यालय के कार्य विधियों की सराहना करते हुए बार-बार ऐसे कार्यक्रम करने का निमन्त्रण दिया। इसके बाद दादी जी का सेन अन्टोनियो में जाना हुआ। वहाँ पर अनेक गणमान्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने दादी का स्वागत किया। ५० मिनट के लिए टेलीविजन पर दादी जी का एक इन्टरव्यु हुआ। मोहनी बहन ने टेलीवीजन पर कमेन्ट्री देते हुए योग अभ्यास कराया तथा ब्र० कु० जयन्ती बहन ने पूछे हुए प्रश्नों के उत्तर दिये। यह इन्टरव्यु पूरे ही अमेरिका में प्रसारित किया गया। उसी दिन शाम को आयोजित एक सम्मेलन में सर्वप्रथम "अक्रास दी टाइम" आस्ट्रेलिया पार्टी ने आध्यात्मिक गीत गाये। जयन्ती बहन ने विद्यालय का परिचय दिया तथा दादी जी ने ईश्वरीय सन्देश सुनाया। मोहिनी बहन ने योग अभ्यास द्वारा शान्ति की अनुभूति कराई। तत्पश्चात सभी को प्रसाद दिया गया। सेन अन्टोनियों से दादी जी सेन-फ्रान्सिसको में गई, वहाँ पर भी बहुत सुन्दर कार्यक्रम चले।

"ब्रह्माकुमारी शशी प्रभा की विदेश यात्रा सफलतापूर्वक सम्पन्न"

आबू पर्वत—राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी शशी प्रभा बहन पिछले ३ मास में ११ देशों के लगभग २० सेवाकेन्द्रों पर ईश्वरीय सेवा करने के पश्चात आबू पहुँच गई हैं। आपने अपनी इस यात्रा के दौरान हालैण्ड, फ्रान्स, बेल-जियम, जर्मनी, पोण्लैंड, स्वीडन, डेनमार्क, स्वीटजरलैण्ड, स्पेन, पुर्तगाल तथा लण्डन में चल रहे राजयोग केन्द्रों पर अनुभव युक्त क्लासेज कराई। भिन्न-भिन्न देशों में आयोजित सेमीनारों में प्रवचन किये!

"ब्रह्माकुमार जगदीश चन्द्र जी द्वारा विदेश में ईश्वरीय सेवायें"

सिडनी—समाचार मिला है कि राजयोगी ब्रह्माकुमार जगदीश चन्द्र जी ने आस्ट्रेलिया के सभी मुख्य शहरों में "पुनर्जन्म" पर बहुत सुन्दर प्रवचन किये। सिडनी में आपके पहुँचते ही रेडियो इन्टरव्यु हुए। एक इन्टरव्यु रात्रि को ९ से ११ बजे तक चला जिसमें एक घण्टा टेलीफोन पर प्रश्न उत्तर चलते रहे। दूसरे देशों के लोग भी इन्टरव्यु के समय ही प्रश्न पूछते थे। सिडनी के एक विशाल हाल में वहाँ के प्रसिद्ध विद्वानों के लिए एक कार्यक्रम रखा गया जिसमें विश्व-विद्यालयों के कई विद्वान प्रोफेसर्स ने भाग लिया। दूसरा कार्यक्रम धार्मिक संस्थाओं के विशिष्ट लोगों के लिए रखा गया। इसके अतिरिक्त एक कार्यक्रम शान्ति का कार्य करने वाली संस्थाओं के लिए चला। भ्राता जगदीश जी ने उन्हें पुनर्जन्म के विषय पर अपने विचार सुनाते हुए आत्मा के तीनों कालों की कहानी सुनाई तथा ज्ञान दाता

पिता परमात्मा का शुभ सन्देश दिया। वहाँ की सेनेट अथवा पार्लियामेन्ट के सदस्यों से भी आपका मिलना हुआ। सिडनी में चले एक सार्वजनिक कार्यक्रम में लगभग ११०० व्यक्तियों ने भाग लिया।

मिजोराम (आसाम)—प्राप्त समाचार के अनुसार मिज़ोराम प्रान्त की राजधानी एज़ल के इतिहास में पहली बार डिब्रूगढ़ व तिनसुकिया सेवाकेन्द्रों की ओर से राजयोग शिविर तथा प्रवचनों का कार्यक्रम आयोजित किया गया। शिविर से पांचुंगा विश्व विद्यालय के प्रोफेसर तथा राज भवन के परिवारों ने विशेष लाभ प्राप्त किया। आसाम राइफल्स के कमान्डेन्ट कर्नल भीमवाल के निमन्त्रण पर डिब्रूगढ़ सेवाकेन्द्र की अध्यक्षा ब्र० कु० रजनी बहन ने राजयोग की विधि पर प्रवचन किया। आसाम के प्रमुख शहरों जोरहाट व सिलचर में तिनसुकिया सेवाकेन्द्र द्वारा सितम्बर मास में राजयोग प्रदर्शनी व शिविरों का आयोजन किया गया। सिलचर में आयोजित मानव एकता सम्मेलन में डिप्टी डेवलपमेंट कमिश्नर भ्राता एच० के० गुप्ता, म्युनिसपल कमिश्नर, इन्जीनियरिंग कालेज के प्रोफेसर तथा अनेक गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर पधारे थे।

दिल्ली शक्तिनगर—सेवाकेन्द्र की ओर से दिल्ली विश्वविद्यालय के पी० जी० वूमेन हास्टल में ईश्वरीय सन्देश देने हेतु एक आध्यात्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रवचन का विषय था राजयोग द्वारा स्वानुभूति तथा प्रवचन के साथ-साथ राजयोग से सम्बन्धित स्लाइडस दिखाई गई। यह कार्यक्रम लगभग डेढ़ घण्टा चला। प्रवचन से लगभग ६० विद्यार्थियों ने लाभ लिया। अन्त में उन्हें प्युरिटी पत्रिका तथा सेवाकेन्द्र के पते की पुस्तिका भेंट की गई।

बम्बई—गामदेवी तथा कोलाबा सेवाकेन्द्रों से प्राप्त समाचार के अनुसार दोनों पर नवरात्रि महोत्सव के उपलक्ष में चैतन्य नव देवियों की भव्य झाकियाँ सजाई गईं। बम्बई शहर के प्रसिद्ध एरिया पुरानी हनुमान गली में कोलाबा सेवाकेन्द्र की ओर से सजाई गई झांकी को दूर-दूर के इलाकों से पधारे लाखों लोगों ने देखा। इसी प्रकार की दूसरी झांकी माधव बाग के बड़े मैदान में सजाई गई। कार्यक्रम की विशेषता यह थी—जो इन देवियों की आरती उतारने के लिए ५०० कुमारियाँ सजी सजाई थालियाँ लेकर आई। आरती उतारने की थालियों में अनेक प्रकार की सजावट थी। इस दृश्य को देखने के लिए जनता उमड़ पड़ी। ४ बजे तक यह झांकी चलती रही। गामदेवी सेवाकेन्द्र द्वारा सजी हुई झांकी का दृश्य टी० वी० सेन्टर वालों ने देखा तथा फिल्म निकाली। कुछ पत्रकार बन्धु तथा ७ हजार प्रतिष्ठित लोगों ने झांकी को देखा।

कानपुर—सिविल लाइन सेवाकेन्द्र द्वारा समाचार मिला है कि शहर के प्रसिद्ध स्थान पर चरित्र निर्माण राजयोग प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन पुलिस उपमहानिरीक्षक श्री बलबीर सिंह बेदी ने किया। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि चरित्र निर्माण की दिशा में ब्र० कु० बहनें बहुत ही महान कार्य कर रही हैं। राजयोग द्वारा काली तमोप्रधान आत्मा को शुद्ध पावन बनाया जा सकता है। न्यायिक मैजिस्ट्रेट तथा कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किये। अनेकानेक आत्माओं ने प्रदर्शनी से लाभ प्राप्त किया।

बोकारो स्टील सिटी—सेवाकेन्द्र की ओर से राजयोग विश्व शान्ति महोत्सव एवं राजयोग शिविरों का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन स्टील प्लांट के जनरल मैनेजर भ्राता एस० पान्डे ने किया। शिव का ध्वजारोहण पूर्वी क्षेत्र की प्रशासिका तथा सहायक मुख्य प्रशासिका निर्मल शान्ता जी ने किया। राजयोग शिविर का उद्घाटन दिल्ली क्षेत्र जोन की इन्चार्ज ब्र० कु० हृदयमोहिनी जी तथा स्टील प्लान्ट के जनरल मैनेजर फाईनान्स भ्राता आर० एन० घोष ने किया। इस आध्यात्मिक मेले को सभी वर्ग के लोगों ने देखा तथा लाभ उठाया। स्टील प्लान्ट के सभी उच्च अधिकारियों ने भी इस मेले को देखकर बड़ी सराहना की। एक विशाल शोभा यात्रा शहर के विभिन्न सेक्टरों से चैतन्य झांकियों के साथ ईश्वरीय सन्देश देने हेतु जनता को आकर्षित कर रही थी। लगभग ३०० लोगों ने राजयोग शिविर किया। करीब ५० नये विद्यार्थी क्लास में शामिल हुए। चैतन्य देवियों की झांकी में गणेश व कार्तिक भी सम्मिलित थे।

पोखरा (नेपाल)—केन्द्र की ओर से ईश्वरीय सेवा अर्थ राजयोग आध्यात्मिक प्रदर्शनी का भव्य आयोजन नवरात्रियों में बड़े ही दिव्य एवं अलौकिक रीति से किया

गया। उद्योग वाणिज्य संघ पोखरा भव्य विशाल हाल में इस प्रदर्शनी का उद्घाटन अंचलाधीश द्वारा दीप जलाकर व टेप काटकर सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर नगर के प्रतिष्ठित गणमान्य समाज सेवक, पत्रकार एवं भूतपूर्व मन्त्री भी बैठे थे। इस अवसर पर विशाल शोभा यात्रा व प्रभात फेरी का आयोजन किया गया जो शहर के विभिन्न भागों से ईश्वरीय सन्देश देते हुए जनता के दिलों को आकर्षित कर रही थी। चैतन्य नव-दुर्गा देवियों की झाँकी का उद्घाटन उद्योग वाणिज्य संघ के सभापति द्वारा दिव्य एवं अलौकिक रीति से किया गया। इन सभी कार्यक्रमों का २ घंटे का विडियो कैसट तैयार किया गया।

जयपुर—समाचार मिला है कि स्थानीय टाऊन हाल में राजयोग प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसके साथ-साथ राजयोग शिविर का भी आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त सिंधी महिला मण्डल, मारवाड़ी महिला मंडल, श्री लक्ष्मीनारायण के मन्दिर में भी प्रवचन रखा गया।

सूरतगढ़—स्थानीय सारड़ों की धर्मशाला में चैतन्य देवियों की झाँकी एवं राजयोग प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। झाँकी का उद्घाटन भ्राता चौ० मनफूल सिंह संसद सदस्य ने किया।

कलकत्ता श्यामनगर—में दुर्गापूजा के शुभ अवसर पर तीन जगह आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन बड़े ही धूम-धाम से किया गया। एक प्रदर्शनी गोन्दल पारा जूट मिल के अन्दर दूसरी शक्ति भवन के प्रांगण में तथा तीसरी अन्नपूर्णा कॉटन मिल के अन्दर की गयी। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन ब्र० कु० हृदयमोहिनी दिल्ली जोन इन्चार्ज तथा अन्नपूर्णा कॉटन मिल के मैनेजर एस० पाल० जी ने किया।

पटना—सेवाकेन्द्र की ओर से दुर्गापूजा के शुभ अवसर पर चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी व राजयोग शिविर के साथ-साथ शेरणी शक्ति दुर्गा माँ की चैतन्य झाँकी सजाई गयी। माँ के दर्शन हेतु व वरदान प्राप्त करने के लिए हजारों लोग इकट्ठे होने लगे।

इलाहाबाद—समाचार मिला है कि 'विश्व कल्याण महोत्सव' का एक दिवसीय सम्मेलन 'प्रयाग महिला विद्यापीठ' के हाल में आयोजित किया गया था। संत समाज के महामण्डलेश्वर श्री १०००८ स्वामी विद्यानन्द जी पधारे थे। सभा की अध्यक्षता दादी मनोहर इन्द्रा जी ने की। सभी वक्तागणों ने अपने मनोरम विचार जनता के समक्ष प्रस्तुत किए। यहाँ के स्थानीय समाचार पत्र अमृत प्रभात व एन० आई० पी० में भी समाचार प्रकाशित हुए।

कटक—समाचार मिला है कि आठगढ़ टाऊन में विश्व-नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गयी, प्रदर्शनी के पश्चात राजयोग शिविर चला। इससे अनेक आत्माओं ने लाभ उठाया। दुर्गा पूजा के अवसर पर चैतन्य देवियों की झाँकी सजाई गयी। इससे भक्त आत्माओं ने देवियों के दर्शन किए।

अकोला—सेवाकेन्द्र की ओर से खंडेलवाल हाईस्कूल जूना शहर में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। राजयोग शिविर तथा प्रवचन का भी आयोजन किया गया। इसके अलावा मुर्तिजापुर शहर में विट्ठल मन्दिर में भी प्रदर्शनी, प्रवचन, योग शिविर का आयोजन किया गया।

बिजायुर—दशहरा त्यौहार के अवसर पर प्रसिद्ध लक्ष्मी मन्दिर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। राजयोग शिविर का भी आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन नगर सभा अध्यक्ष मान्यश्री जानवेकर जी ने किया।

तिनसुकीया—समाचार मिला है कि दुर्गा पूजा के शुभ अवसर पर एक चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर एक विशाल शोभा यात्रा भी निकाली गयी थी। इस प्रदर्शनी द्वारा अनेक आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश प्राप्त हुआ। योग शिविर का प्रोग्राम भी रखा गया था जिससे बहुतों ने लाभ लिया।

कानपुर नया गंज—नव रात्रि और दशहरा के अवसर पर नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। राजयोग शिविर द्वारा अनेक आत्माओं को ईश्वरानुभूति का अनुभव कराया गया। इसके अतिरिक्त ग्रामीण सेवा भी की गई। पितर विर्सजनी अमावश्या को गंगा स्नान मेला लगता है उस मेले में प्रदर्शनी द्वारा अनेकों को ईश्वरीय सन्देश दिया गया।

(शेष पृष्ठ २३ पर)

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी ९/१९ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ग्रन्थ भारती, शाहदरा, दिल्ली-३२ से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D, (E)—70